तारानन्द वियोगीक रचना-संसार

गजल–संग्रह : अपन युद्धक साक्ष्य
कविता–संग्रह : हस्तक्षेप, बुद्ध का दुख और मेरा, प्रलय–रहस्य
कथा–संग्रह : शिलालेख, अतिक्रमण
संस्मरण : तुमि चिर सारथि
आलोचना : कर्मधारय, धूमकेतु, रामकथा आ मैथिली रामायण
बाल–साहित्य : ई भेटल तँ की भेटल, गोनू झा के खिस्सा, राक्षस की अंगूठी
इतिहास : महिषी की तारा : इतिहास और आख्यान
सम्पादित कृतिः
(मैथिली) एकटा चम्पाकली एकटा विषधर (राजकमल चौधरीक कथा–संग्रह), श्वेतपत्र (समकालीन कथा) देसिल बयना (स्वातंत्र्योत्तर कथा) संकल्प (समकालीन कविता) लोकवेद आ लाल किला (गजल)
(हिन्दी) राजकमल चौधरी : सृजन के आयाम, मण्डन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त, बिहार की हिन्दी कहानी (भाग–1, भाग–2)
सम्पादित पत्रिकाः देशज, हालचाल, 'अंतिका' क किरण–विशेषांक (मैथिली), कारखाना, संवेद (हिन्दी)
अनूदित कृति : भनहि विद्यापति (पं. गोविंद झाक उपन्यास), कोसी के आर–पार (कथा संग्रह)
सम्पादित ऑडियो कैसेटः 'देसिल बयना' भाग 1,2,3 मे क्रमशः कुलानन्द मिश्र, भीमनाथ झा आ उदयचन्द्र झा विनोदक काव्यपाठ
सम्मान : मुक्तिबोध–सम्मान, किरण सम्मान, बालसाहित्यक लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार

सम्पर्क : बदरिकाश्रम, महिषी, सहरसा–852216
tara.viyogi@gmail.com
www.mithila-mihir.blogspot.com



तारानन्द वियोगी बजता कथा अहँक नित रोज
अपन 'आत्म' कैँ पाबक खातिर करता अहँ के खोज

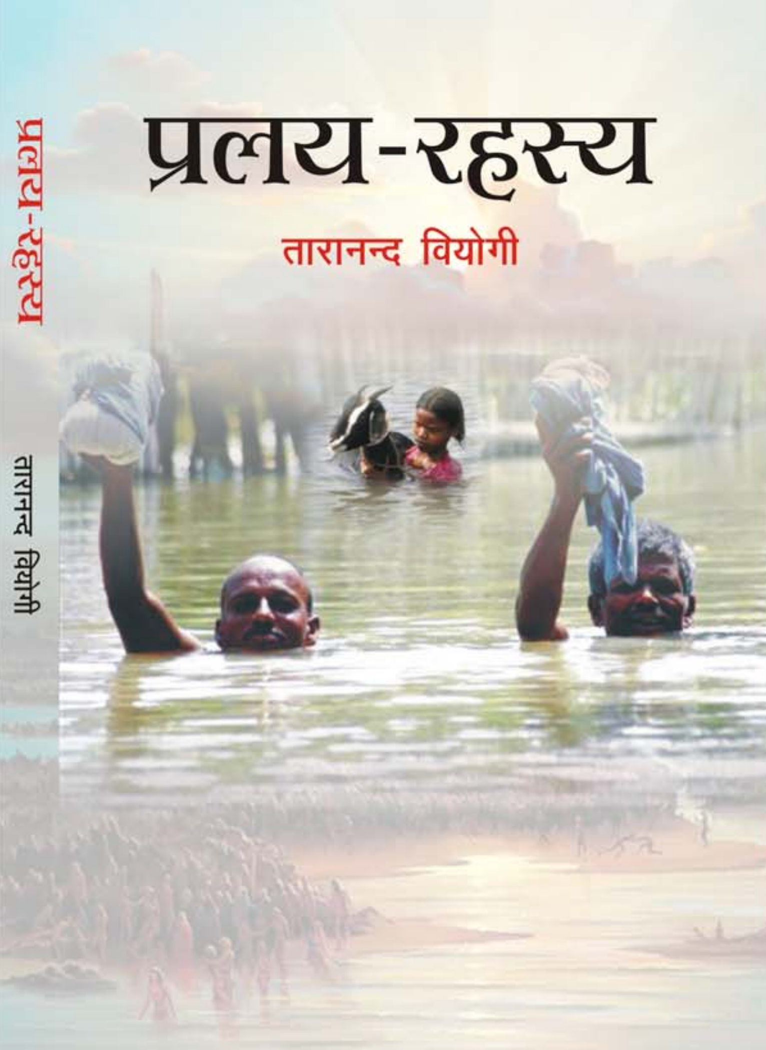
सुख-सुविधा के कमी ने रहतनि, रहता मुदा उदास
समयक गति ई कोना बदलतै, करता सदति प्रयास

हुनका मन के वृन्दावन मे, बिरजत अहँ के मूर्त्ति
अहँ के भाव-अभाव-हिसाबेँ पौता मांगक पूर्त्ति

कतबो दूर पहुँचि जाए गुड्डी, ताग अहीं के हाथ
समय पाबि क' घैंचि लेब, ने करबै कहियो लाथ

तारानन्द वियोगी रहता सदति अहाँ के संग
अभिलाषा ई हुनक थिकनि से अहूँ ने करबै भंग

प्रलय-रहस्य
तारानन्द वियोगी



मैथिलीक तेजस्वी कवि डॉ. तारानन्द वियोगी, अपन कद व पद सँ नहि, ओहि लाख–हजार शब्द सँ चीन्हल जाइत छथि, जे हुनकर मजगूत कलम आ विरल प्रतिभा सँ निःसृत भेलनि अछि। विद्यापति–यात्री–सुमन–मधुपक काव्य–परम्परा, जे राजकमल–सोमदेव–जीवकान्त–कुलानन्दक बाद एक ठमकल उतार पर आबि गेल छल, तकरा वियोगीक अवदान सँ एक उल्लेखनीय गति आ उल्लास भेटलैक अछि। एतेक सुन्दर, आ सुगम कविता वियोगी कोना लिखि पबैत छथि? जेहने परम्परा पर, तेहने उत्तर–आधुनिकता पर! जेहने मुक्त–छन्द मे, तेहने परंपरित छन्द–विधान मे! मुदा, सभठाम एकतानता आ एकसूत्रता मौजूद! सभठाम समान वैचारिक सजगता! हुनकर कविता सभ कैँ एक खास क्रम मे बान्हि क' पढ़ू तँ समकालीन मिथिलाक सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास तैयार भ' जाएत। आलोचक लोकनि मानैत छथि जे मैथिली कविताक शानदार विरासत वियोगी मे भकरार भेल अछि, जकर विकासक जतन ओ बड़े साधनापूर्वक क' रहल छथि। समकालीन भारतीय कविता मे वियोगीक कविताक अपन खास पहिचान बनि चुकल अछि। अनेको बेर एहन भेल अछि जे हुनकर कविता मूल मैथिली मे छप' सँ पहिने हिन्दी वा अंग्रेजी वा बंगला मे अनूदित भ'क' छपि चुकल रहैत अछि।

मैथिली कविता मे एक नवीन युगक सूत्रपात कएनिहार वियोगीक मादे पाठक–आलोचक लोकनि अक्सरहां अनेक तरहक दाबा–प्रतिदाबा करैत रहैत छथि। मुदा वियोगी कैँ जँ पुछियनु तँ बड़े शालीनता आ सुधांगपनक संग कहताह– *"तों जुनि दुखी हुअह हौ बाबू जोगीलाल/हम तँ जते बेर सौचे छी/ यैह बात पाबै छी/जे अपने लेल अपने/कलम उठाबै छी।"*

यैह शालीनता आ यैह सुधांगपन वियोगीक ताकत थिक, आ मैथिली काव्य–परम्पराक ताकत सेहो यैह थिक।

–अविनाश

çy;&jgL;

rkjkuUn fo;kSxh

भविष्यक साहित्यकार
सुरमय रंजन
एवं अन्य कें समर्पित

सौन्दर्य अहांक भीतर जे व्याप्त,
तकरा वातावरण मे कने छिडियाब' दियौ।

अपन हाजरी बनाउ
जे एहन जालिम समय मे
एकटा अहूं भेलहुं।

।।अनुक्रम।।

विद्यापतिक डीह पर
मंडन मिश्र
गाम कें हम बहुत मोन पडलियै फगुआक दिन
गमन–गाथा
मानव–शास्त्र
प्रलय–रहस्य
आ, अन्त मे मिथिला

क्षमा–याचना

दर्पण नहि रही,
रही तॅ अन्ततः थारिये,
जाहि मे जानि नहि कतेक लोक भोजन केलनि।

रही तॅ थारिये।

जतेक प्रक्षेपण भेल
ताहि मे सॅ बहुतो कें सोंखलहुं,
सोंखल जे भेल नहि बुत्ता भरि
सैहटा प्रत्यावर्तित केलहुं।

आ, तखनहुं
अहां कहै छी
बड कटु लिखलहुं–ए हम
बहुतो कें आहत–विहत केलकनि–ए हमर तथ्य।

हे लोक! हे वेद!
अहां सब जे हमरा देलहुं
ताही मे सॅ तॅ भेल अछि प्रत्यावर्तित
जखन कि दर्पण छलहुं नहि हम।

घर

कतय अछि हमर घर??

जतय अछि
ततय बस डेरा,
जतय अछि
ततय बस मकान
लोके लोक,समाने समान।

एक इच्छा बामा
एक इच्छा दहिना
जोतल रह रे मन जोतल रह
कि कंक्रीट तर मे गोंतल रह।

घर अछि जं हमर सपना
तं से तोरो सपना हेतह
हौ बाबू जोगीलाल
ई सपना कहिया आकार लेतह??

हम तं अपने घर मे बौआइ छी
अपने घरक लेल
कने जांचि लैह
जे तोरा घर सं तोहर घर
कतेक खाइ छह मेल ।।

ककरा लेल लिखै छी

जै काल मे लिखै छी
मुलुकक रहै छी आनन्दित।

लिखल जखन भ' जाइए
होइए जे बडका काज केलहुंए।

पढै छी जखन सद्यः लिखलका कें
तं बड तोष होइए
जे चलह
धरतीक अन्न–तीमन खेलियै
तं ओकरा लेल काजो किछु केलियै।

बाद मे फेर जं कहियो
पढै छी लिखलका कें
तं भारी अचरज मे पडै छी अपने
अरे, ई बात हम लिखलियै? हम?
ई तं बहुत जीवन्त बात लिखि सकलियै...

अइ आत्मबोध सं जे भीतर ऊर्जा खदबदाइए
से फेर सृजन करबाक लेल
हृदय सुगबुगाइए..

तों जुनि दुखी हुअह हौ बाबू जोगीलाल,
हम तं जते बेर सोचौ छी
यैह बात पाबै छी
जे अपने लेल अपने
कलम उठाबै छी।

संभावना

बाट द' क' चलिहह
तँ ठेकना क' देखिहह
एक–एक ठौर, एक–एक ठाम।

ठेकानबह जँ
तँ देखबह
जे कोन्नहु टा जग्गह बनि सकैए कुरुक्षेत्र
जखन कि
बोधिवृक्षो जनमि सकैए कोन्नहु टा ठाम।

भेंट–मुलकात होअह जैखन लोक सब सँ
अतत्तह होश–संगे लिहह
एक–एक के नोटिस।

तारभियार करह जोख सँ
तँ पेबहक तों
जे एक–एक मनुक्ख मे छै
स्रष्टा हेबाक गहराइ तमाम,
जखन कि कोन्नहु टा व्यक्ति बनि सकैए कसाइयो।

हौ बाबू जोगीलाल,
बाट द' क' चलिहह
तँ देखिहह एक–एक ठौर,
एक–एक ठाम।

भूमिका

हमरा दुख अछि जे बनि नहि सकलहुं
सांगोपांग ग्रन्थ।

लेकिन, हे!
बेकारे दुख अछि
कोना बनि पौतहुं सांगोपांग ग्रन्थ?

जोडैत रहलहुं सदरिकाल
साध्य आ साधन–बीच एकसूत्रता,
पलखति जॅ भेटल
तॅ कविता लिखैत रहलहुं।

अनचिन्हार बटोहियो कें गछलहुं दोस–महीम
सघन एकान्तो कें सृजन।

ने हृदय के कहियो बात काटल,
ने बधिया कएल कहियो बुद्धिये के।

हौ,
एकरे कम नहि बूझह जोगी!
जे अछैत एतेक अपाय,
भइये क' रहलहुं किछु–ने–किछु।

की करबहक?

ई तॅ छै आब भविष्य पर
जे अपन फैसला करओ ओ––
के हएत बेसी पठनीय?

सांगोपांग ग्रन्थ?
आ कि ओकर भूमिका?

रंग

थोडबा संगीत अछि
बहुत–बहुत सोर अछि
थोडबा टा धन अछि
बहुत–बहुत चोर अछि

सम्हरह जोगी हौ,
सम्हरह

थोडबे टा रंग, आर
पूरा जीवन सादा अछि
थोडबे अछि काल
आर,मारिते रास बाधा अछि

धनक लेल कविक प्रार्थना

जुग एते बदलि गेल
अइ जबाना मे आब
ई कोना कहि सकै छी
जे धन अधलाह थिक।

कोना कहबै
जे ज्ञान–लग मे धन तुच्छ छै
जखन कि देखि रहल छी चतुर्दिक
जे धन भेने
ज्ञानो–विनिमय बेसी भ' रहल छै।

तखन कहब एतबे
जे प्रभु, धन दिय' तॅ
ज्ञान ल' क' नै दिय'

धन जॅ दिय' प्रभु,
तॅ हमरा सॅ हमरा छीनि क'
नै दिय'।

धन दिय' तॅ अइ होश–संग दिय'
जे धन हमरा हुअए
हम धन के नै भ' जाइयै।

लेखा

अइ दुनियां मे एना रहै छी
जेना कांट–कूस पर लेटल बबाजी रहैए।

बबाजी कें दान–दछिनाक लोभ।
मुदा हमरा?
हमरा कथीक लोभ?

हमरा लोभ
यथास्थितिक।

अहिना बाल–बच्चा, घर–परिवार हो,
अहिना मित्र लोकनि सॅ भरल फुलबाडी
अहिना लोक हमरा नीक लोक बुझैत रहथु।

कांट–कूस पर लेटल–सन बीतैए अहोरात्र
मुदा लोक भेटै छथि तॅ मुस्काइ छी।

नीक लोक होइ लेल सुखी हएब जरूरी छै
आ तै लेल जरूरी छै मुस्की।
हाय हाय रे मुस्की।

ककरा ठकै छह हौ बाबू जोगीलाल,
सब अहिना तोरो ठकै छथुन।
घर–घर एक्के लेखा बाबू हौ,
सब घर एक्के लेखा।

हमहूं तॅ कोनो कम नहि

हमरे लिखल किताब !
आ, ताकैए टुकुर–टुकुर
हमरे दिस।

देखू तमाशा !
हमरे सिखबैए विस्मृत लिपिशास्त्र
हमरे पढबैए भाषा–समाज।

आ,
हमहूं तॅ कोनो कम नहि !
चिन्है के कोसिस मे छी लागल

ककरा?
ककरा चिन्हबै हम?

किताब कें?
कि अपना कें?

जे से !
चिन्हैये के तॅ कोसिस मे छी लागल
फरिया क।

हमहूं तॅ कोनो कम नहि।

हाल ठेकान

चुपचाप कोनो क्षण नहि
एक महाचीत्कार समस्त ठाम व्याप्त।

सब क्यो अपन–अपन कहबाक बेगरता मे
सुननिहार ने क्यो आन।

के देत कान–बात?
के बोल–भरोस?
एक अनठेकान कतरब्योंत मे मन।

नहि नहि

ई किन्नहु नहि भेल जीवन
किन्नहु नहि।

जीवन कें तँ थोडे आर्द्र हेबाक चाही
थोडेक हालदार,
जाहि मे अंकुरि सकय बीज।

जोखू कलाकार,
जोखू
अपन हाल ठेकान।

शब्द

(अविनाशक लेल)

बड–बड उल्लास लेने फल फुलाएल
दूभि मुस्कियाएल बड–बड उछाह लेने

उत्सव–संगीत छिटकबैत चिडै चुनमुनाएल
कतेक कहू
जीवनक अर्थ खोलैत कहियो पहाड हाक देलक
गतिक अर्थ बुझबैत कहियो नदी
कहियो–कहियो तँ लुक्खी आ बिज्जी धरि
चिडचिडी आ भांठि धरि होशक तह खोललक।

बहुत किछु करैत गेल बहुत बेर
बहुतो गोटे हिलि–मिलि हमरा लेल।

जे प्रेम करै गेल ई सब हिलि–मिलि
बहुत गहराइ सँ हम बुझलहुं तकरा
बहुत सहज भ' क' तकरा जीलहुं
स्पन्दित भेलहुं
तीव्र संवेदनक्षमताक उन्मेषवश।

कवि रही हम, द्रष्टा रही
तँ, एहि प्रेम कें अभिव्यक्ति देबाक
गमलहुं दबाव।
आ,
अन्ततः एकरा शब्द मे अभिव्यक्त कएल।

फूल जे फुलाएल छल, दूभि जे ठठाएल छल
से शब्द मे नहि
चिडै शब्द मे चुनमुनाएल छल नहि
ने पहाड शब्द मे पाडने रहए हाक
चिडचिडी आ भांठि शब्द मे कोना किछु कहैत?

ई लोकनि सब क्यो हमर आत्मीय
निःशब्द सँ हमरा केने छल प्रेम

निर्विचार सँ हमरा छूने छल।

मुदा,
हम जखन व्यक्त होबए चाहलहुं
शब्दे टा एक रस्ता छल हमरा लग
विचारे टा एकमात्र साधन।

निःशब्द के प्रतीति छल जे कोनो कतोक
तकरा हम शब्दें शब्दें खरचा केलहुं।

हम लचार रही
निःशब्द आ निर्विचार भ' क' अभिव्यक्त हएब
हमरा सभ्यता मे नहि छल
(छल हएत कहियो, आब तँ बचल छल नहि)

अनायास हम अभिव्यक्त भ' नहि सकैत रही
फूल जकां, दूभि जकां
टांग जेना हमर कटि गेल रहए
आ, शब्द कें बनौने छलहुं बैशाखी।

दुख हमर बूझब, मुन्ना
शब्द जँ छल हमर साधन
तँ शब्दे छल हमर लचारी
सामर्थ्यक सीमा।

भविष्य

चहुंदिस जाले–जाल
भूखे–भूख, रोगे–रोग, बलाइये बलाय
चहुंदिस अन्हारे–अन्हार
गुज–गुज अन्हार।

मुदा, जुलुम सुनबै?
सपना देखै छी सदिखन इजोते के।
चकाचक प्रकाश के
खुशी के, उल्लास के।

पुछै छथि बालक––
अन्हरिया एहन, जकर सूझय नहि अवसान
आ सपनो तेहन, जकर जोडा ने आन
कोना होइए बाबू,
अहां कें एना कोना होइए?

हौ नुनू,
होइए, से कोनो अनेरे नहि होइए
इजोतो छै सृष्टि मे,
तें होइए
भविष्यो छै,
तें।

जतए किछुओ नहि हो
ततए की भविष्यो नहि हो?

तुलना

पिपरक गाछ होइत अछि चंचल
थोडबो बसात हो
तॅ नाचि–नाचि मनबैए उल्लास।

आमक गाछ मुदा, बडे गुरु गंभीर।
हौ बाबू, फले टाक राजा छियह कि सौंसे ब्रह्माण्डक?
(जे एते गुरु गंभीर?)

मुदा, बेलक गाछ कें एहि सब सॅ नहि कोनो लेना–देना
नहुएं नहुएं मूडी डोलबैए मस्ती मे
जेना सूनि रहल हो मरदे भीमसेन जोशी सॅ
राग भीम पलासी।

अनारक गाछ नटखुटारे तते जे बुझू तही मे मस्त
जेना भैरवेश्वर झा–संग जोडी मिलैत तारानन्द वियोगी
अनेरे हंसि रहल होथि घैला–छाप हॅसी।

मुदा, ई दूभि
ई मरदबा तॅ सब सॅ जुलुम, सब सॅ जब्बर
हॅस भाइ बैजयन्ती, अपन फूल ल' क' हॅस
मुदा ई दुबरी पंडित अपन अस्तित्वे ल' क' परम गदगद्

पात मे नहि, आत्मा मे बसैत अछि हरियरी
जेना कविता मे जीवकान्त।

ककरो कोनो जबाव नहि
नहि, कोनो तुलना नहि ककरो सॅ ककरो
किन्नहु नहि शोच्याशोच्य–विवेचन.....

देखियौ,
काल्हि भरि दिन चरलकैए टोल भरिक बकरी
मुदा, ई दूभि सब उत्साहित कते
जेना चूबि रहल हो नस–नस सॅ उत्सव

एहन घौन जीवन–राग अहां कतहु देखने छी?

कः कालः

केहन अछि ई समय?
केहन अछि?

किछु तीतो अछि, किछु मीठो अछि
किछु ओठर अछि, किछु दोसर अछि

किछु अछि
पाकल दाडिम दाना–सन भहरैत
किछु कोशी–कछेरक रेगिस्तान–सन ठहरैत

किछु बरफ–सन, किछु आगि–सन
किछु कानि–सन, किछु लागि–सन

किछु सनसनाइत,हनहनाइत
किछु सिमसिमाइत, टिमटिमाइत।

किछु धानक खेत–सन सोनगर–पोरगर हीर अछि
किछु गरीबक आंखि–सन गॅहीर अछि

मानल जे किछु समय तोरा तोडै छह, नछोडै छह
मुदा हौ,
किछु तॅ तोरा
हमरो–सॅग हुनको–सॅग जोडै छह, अगोडै छह।

देखहक, तॅ ई समय कोनो बेजाइयो नै छै
पटए नै किन्नहु तेहन हरजाइयो नै छै।

उनटाबह इतिहास
बाजह, कहिया एहन समय नै छल?
कहिया?

मुदा, कहिया हम–तों खंडहर नै तोडलहुं?
आर कहह, जे कहिया
समय के छाती पर पगचिह्न नै छोडलहुं?

स्त्रीक दुनिञा

स्त्रीक एक दुनिञा
ओकरा भीतर।
एक दुनिञा ओकरा बाहर।

भीतर———
किसिम किसिम के
फूल फुलबाडी
बाहर———
एक एक डेग
संकट सं भारी।

भीतर———
एकटा राधा अछि
एकटा कन्हैया अछि
बाहर———
जनक छथि लाचार
आ राम निरदैया अछि।

हौ बाबू जोगीलाल
स्त्री कें बुझिहह
तं ठीक एही तरहें बुझिहह———

तोरा जकां
एक दुनिञा कहियो
नै हेतै ओकर
जे ओकरा ले' ठमकि क' चलतै
से हेतै ओकर।

स्त्री जं रहती सृष्टि मे
तं बस एहिना रहती
से चाहे तोरा सं किछु
कहती, नै कहती।

भनहि विद्यापति

कहां गेल?कहां गेल?
कहां गेल हमर जीवन?
हमर जीवनक संगीत कहां गेल?
आ, हमर हिस्साक इजोत?
आ, हमर हिस्साक अधिकार?
आ, हमर हिस्साक गरिमा?

हे वनमाली
तोहर मदिर थपकी सॅ भ क पुलकित
सूति रहल रही निसभेर।
हेरा गेल रही मस्त अपने भीतर,
बाहर सॅ तते सुरक्षित पौने रही अपना कें
तोहर कोडा मे।

तते भरोस, तते भरोस रहए तोरा पर
जे सबटा सुधि–बुधि बिला देने रही प्राणेश!

आब
जागलहुं अछि तोहर थापड सॅ
तॅ देखह ने
हमरा अपन जीवने नहि कतौ देखाइए।
कोम्हर जा दुबकल हमर प्राणक विहान?
कतय नुकाएल हमर ऊर्जा,हमर ऊष्मा,
हमर लय कन्हाइ!

टापर–टोइया दै तॅ छी चहुंदिस
कतहु ने क्यो भेटैए सहाय
हे, तोहूं किछु करह प्रिय, उपाय।

हेय्य्यैह!

य्यै' भेटल हमर संघर्ष
य्यै' हमर नोर, य्यै' दायित्वो
मुदा ओह,
कहां कतहु देखै छी अपन जीवन, अपन सौरभ
कतय नुकाएल हमर संगीत, हमर गौरव?

कवि विद्यापति कहैत छथि–––

एवंप्रकारें
नाना प्रपंच सॅ
स्त्रीक हक चोरौनिहार चतुर मुरारी
अहांक कल्याण करथि।

गांधी जी

जिल्ला भरिक हाकिम–हुकुमक मिटिंग मे
आइ डकूबा कलक्टर हमरा
'गांधी जी' कहि क' जलील केलक,
थू–थू केलक बेबर्दास्त।

ओ केलक जलील,ततबे नहि ने,
हमरा लागल सेहो
जे थू–थू भेलहुं अछि अनसम्हार।

गांधीक सोच, हुनक नीति सॅ
मतान्तर अछि हमरा मारिते रास
से तॅ खैर, एक बात

जवाहर लाल सॅ अटल बिहारी धरि
कान फुकैत रहला हमर अहर्निश
जे गांधीवाद मे ने संभव अछि मुक्ति देशक,
ने चेतनाक उन्नयन हमर,

से, लागल बहूऽऽऽत
जे जलील भेलहुं हम पुरजोर।

मुदा जे कहू, भाइ यौ भैयारी,
बीति गेल ओ विषम शताब्दीक तीत–मीठ दिन,
सुनै छी दिनराति
जे आएल नवीन सहस्राब्दी,
देखै छी अपन चौबगली चौचंक
जे बचल नहि अछि आब
तेसर कोनो बाट–––

आइ कि तॅ अहां गांधी जी छी
कि तॅ अहां अंगरेज।

रचए जॅ चाहैत होइ अहां किछु नवीन,
बचबए जॅ चाहैत होइ धरती कें, धरती परहक कें,
कहल जाएत हिकारत–संग अहां कें
गांधी–ए जी।

हम होइ छी तैयार,
अहूं तैयार होउ।

विपत्ति मे गाओल जाइबला गीत

एक दिन उडि क' एतै मेघ इन्द्र–नील।

ओइ दिन सिहिक–सिहिक उठतै पुरिबा
जे हमरा ग'ह धरि पैसतै।
उनटि–पुनटि गोहरौता दादुर, हमर तात।

घहरेतै ओइ दिन घटा मदमस्त
आ हम देखबै
जे ई जोडो भरि बगडा हमही छी
नहा रहल छी चुरूक भरि पानि मे
छपर–छपर।

हम देखबै
यैह हम।
हमही।

घरबे

‘घरबे छी यौ....?’
डेढिया पर सं आबाज द’ रहल छथि
हमर क्यो अपेक्षित।

हम घरे मे छी।
घरक भीतर चौकी पर बैसल
निहारि रहल छी एहि बगडा कें।

बगडा चार मे लगेने अछि खोता,
खोता मे ओकर चारि–पांच बच्चा,
आ तकरा सब सं
बतिया रहल अछि एखन विभोर।

आ,
हम विभोर छी निहारै मे।

हम अपन घर मे छी
आ बगडा सेहो अपन घरे मे अछि।

‘घरबे छी यौ....?’
फेर पुकार लगबै छथि अपेक्षित।

एह!
केहन रहत
जं हमरा बदला ई बगडा दियय जबाव
आउ आउ अपेक्षित, अहांक स्वागत।

जै ठां भेटए अहार

अनेक–अनेक तरहक
सामाजिक–मनोवैज्ञानिक सुरक्षा कें अकानैत
जोगीलाल
बनौलनि दूमहला मकान

दूमहला पर घरबास भेल
तं ओतए इजोत जरल

इजोत देखलनि तं जुमै गेलाह
एक–सं–एक नेमव्रतधारी बहादुर
कीट,फतिंगा,नन्हकी आ गन्हकी

जै ठां भेटए अहार,तत्तहि करी विहार
ई जे कानून छियै
से कोनो भारतीय सरकारक कानून तं छियै नहि
जाहि मे सेक्सन सं बेसी भोकांडे पाओल जाइ
से
पहुंचलाह कीट–फतिंगा–वृन्द
तं पाछुए लागल जुमलाह महाशय बेंग

आ, जोगीलालक दूमहला पर आइ
साक्षात नागराज देलखिन अछि दरसन।

वैह बात !
जै टां भेटए अहार तत्तहि करी विहार........

व्यथित छथि जोगीलाल !

हौ बाबू जोगीलाल,
आब की करबह?
कते–कते व्यथें एक्के जनम मे मरबह !!

सुग्गा रटलक सीताराम

'सीताराम–सीताराम' रटलक सुग्गा
आ जनम अवधि पिजडा मे कैद रहल ।

मासु खाइ लेल पकडल गेल हारिल–बटेर
पडबा चिट्ठी पहुचाब' लेल पकडल गेल
मुदा सुग्गा पकडल गेल एही लेल
जे ओ 'सीताराम–सीताराम' रटि सकैए ।

रटैए सुग्गा सीताराम–सीताराम
आ भोगैए जनम–जनम के गुलामी
प्रभु–युग मे मुइल ओहि करोडो मनुक्ख जकां
जे राम–नाम पर काया कुर्बान केलक ।

जागह बाबू जोगीलाल, जागह

उठि क' ठाढ भ' रहल छथि प्रभु लोकनि
आब तोरो रटाएल जेतह सीताराम
पिजडा आब तोरो लेल बनाएल जेतह ।

गिद्धक पक्ष मे एकटा कविता

गामक नाम गिदवास
गामक नाम गिदपुरा
कोनो गामक नाम गीधा
कोनो गामक नाम गिद्धौर

कहबाक माने की?

माने जे गिद्ध मुर्दाबाद
गिद्ध मुर्दाबाद मुर्दाबाद....

दोहाइ हे नियन्ता लोकनि
अरारि तॅ रहल छल हएत
ओइ गौंआं सब सॅ
मुदा शिकार बनल गिद्ध।

आ देखियौ
जे एतेक शताब्दी बाद
से गिद्ध मारल गेल
रहलै नै क्यो कुल मे रोबनहारा

करेज जुडाएल दुश्मन के।

आ देखियौ
जे दुनियां आब कानैए गिद्ध लेल

बकैए
जे उकन्नन भ' गेल एक दुर्लभ प्रजाति।

सिपाही देखैए आमक गाछ

सिपाही जखन देखैए आमक गाछ
तं केहन असर्ध लगैए

आमक गाछ पर मधुमाछीक डेरा नहि
जे सिपाही कें हो मधु उतारबाक लोभ।
आमक गाछ पर आम नहि फडल
जे रैयत सं मंगनी करबाक वा दफानि लेबाक
बनबैत हो योजना।
आमक गाछ पर बानर नहि लटकल
जे तकर देखैत हो लीला
आ बजरंगी के जयकार उचारैत हो।

तखन किए सिपाही देखत आमक गाछ?

बरदी–टोपी पहिरने
हाथ मे डंटा सम्हारने
ई मरदे सिपाही?
आमक गाछ?

जागह हौ बाबू जोगीलाल, जागह
आइ सिपाही तोहर आमक गाछ देखि गेलहु–ए।

।

माखन,मखान खा

(दरभंगा जिलाक सम्पूर्ण साक्षरता–प्राइमरक प्रथम पाठक शीर्षक)

माखन, मखान खा
खा माखन, मखान खा।

मुदा, कोना खेतै माखन मखान?
माखन जॅ मखान खेतै
तॅ घरक आठ प्राणीक मुंह मे
क'र कतय सॅ जेतै?
मखान बेचता जोगीलाल
तॅ घर मे नून–तेल एतै।

माखन मखान नै खाएत
मकैक रोटी खाएत।
मखानक फेर मे जॅ पडल
तॅ मकैक रोटियो पर आफत आएत।

हौ भैया जोगीलाल
बुझाइए माखन आब मखान खेतह
ओ किताब मे पढलकह–ए।

माखन मखान खेतह
तॅ तोहूं
अइ लेल किछु करहक।
सबा सेर लाबा फोडै छह नित्त रोज
तॅ आब डेढ सेर फोडह
किछु आर बढाबह श्रम
किछु आर करह बचत।
माखन छियह बेटा तोहर दुलरुआ।

हौ भैया जोगीलाल,
माखन आब मखान खेतह जरूर
ओ किताब मे पढलकह–ए।

चप्पल

¼,d½

हजार कोस, दस हजार कोस
चलि क'
एहि ठाम पहुंचलाक बाद
आब
जिरा रहल अछि जोडो भरि चप्पल !

जिरा रहल अछि
तं एहि सं ई नहि बूझब
जे ठीके जिरा रहल अछि
एक्को रत्ती असोथकित नहि अछि
आ ने मिसियो भरि बदहबास ।

देखियौ.
क्यो कहत जे
दस हजार कोस चलि क' आएल अछि
एखने कहियौ चलए
तं बीस हजार कोस चलबाक लेल तैयार अछि

¼n½

के राखलक अछि चप्पल एना?

एहि तरहें सजा क'
कतहु चप्पल राखल जाइ?

के राखलक?

नहि नहि
पएर तं एना नहिए राखने हएत
पएर तं जनैत अछि गति
एना 'स्थिति' मे कोना राखत ओ चप्पल?

देखियौ
जोडम–जोड लागल
आमने–सामने सजाओल
जेना इंची–टेप सं नापि क'
स्थापित कएल गेल हो
जरूर ई कोनो
रामराजी के खुराफात छिऐक !

पएर तं जनैत अछि गति
ओ राखत तं थोडे गति मे राखत
अ–गति मे राखल चप्पल तं अक्सरहां
पूजा करैक लेल राखल जाइए !

अपन–अपन उद्यम सं सभ क्यो बान्हल अछि !
जकरा गति सं नहि कोनो मतलब
अ–गति मे राखल चप्पल कें
पूजैए से ।

बकरी

दूर कतहु सं एलैए अबाज
आ चौकन्ना भ' गेल अछि बकरी

छोडि देलक अछि घास टुंगनाइ
आ चहुंदिस मूडी घुमा–घुमा
क' रहल अछि अखियास...

बकरी कें स्मृति छै
कुकुरक अबाज ओ चीन्हैए
ओ घटना ओकरा मोन छै
जखन पछिला बेर ओकरा
कुकूर सं पाला पडल रहै

बकरी कें
नहि बनेबाक छै परमाणु बम ने सेलुलर फोन
ओकरा पशुपालन विभागक निदेशको नहि बहाल हेबाक छै
एतबे स्मृति ओकरा लेल काफी छै
जे सुनए जं कुकुरक अबाज तं करए अखियास.....

तखन कहबै
जे असुरक्षित अछि बकरी

तखन ईहो कहू
जे एहि धर्मप्राण देश मे
के नहि अछि असुरक्षित?

यौ,
हमरा तं होइए लिलसा कखनो बडी जोर
बकरियो होइ के मजा नहि छै कोनो थोड..

बुद्धक दुख

पैंतीस बरख पर घुरलाह अछि बुद्ध
रहलाह एहि बीच पटना संग्रहालयक कारागार मे

पैंतीस बरख पहिने मनुआं धार मे बासा छलनि
आब बसै छथि कारू संग्रहालयक धमनभट्ठी मे

देह लगा क' टांगल छनि साइनबोर्ड
जे ओ मनुआं धार सं बरामद भेलाह

संस्कृति,
जाहि मे झुमका बरामद होइत हो
दुमका मे
आ कनबाली
काशी मे
बुद्ध बरामद होथि मनुआं धार मे
कोन आश्चर्य?

तरह–तरहें लोक व्यक्त क' जाइए अपन ओछपन
आ बुद्ध आंखि मुनने
निश्चेष्ट बैसल रहैत छथि।

बुद्ध कें एखन
आर बहुत दुख भोगबाक छनि, बुझाइए

पंडित–पंडा लोकनि केलनि अछि प्रयास
बुद्ध फेर सं मनुआं नदी–तट पहुचथि।

ओ सब महामान्य लोकनि कें क' रहल छथि प्रभावित
हिन्दू–हिन्दूक दैत दोहाइ।

मनुआं–कात मे पहिने बनतनि मन्दिर
जतए बुद्ध कालभैरव वा शीतला माइ
कहा क' पूजल जेताह।

जहिया कहियो फेर कएले उद्‌घाटन कें
पुनः उद्‌घाटित करै जेताह इतिहासकार लोकनि

जे ओ शीतला माइ नहि गौतम बुद्ध थिकाह,
एक बेर फेर मनुआं धार मे गोडल जेताह बुद्ध।

जानि नहि फेर कहिया
बहरा सकताह मनुआं धारक शयनालय सं
आ फेर पहुंचताह कहिया पटना संग्रहालयक कारागार ?

साले–साल गांधी–वध

एहि साल फेर गांधी मुइलाह
तॅ मने हमहूं भेलहुं निश्चिन्त।

एह,
तीस साल सॅ
केने रहथि हरान

बेर बेर पछताबी जे
ओह,
हम गांधी नहि बनि सकलहुं
गांधीक देश मे जनमियो क'
हम गांधी नहि बनि सकलहुं।

अइ बेर मुइलाह गांधी
तॅ मने भेल छी निश्चिन्त।

जागल अछि भरोस
जे लोक आब सोचताह।
नेतावादक बाद?
माओवाद।
–––माओवाद?

होइए जे लोक आब
आगू सोचताह जरूर।

सोचौए पडतनि.....

मोबाइल

वैज्ञानिक के मस्तिष्क सॅ अहां बहराएल छलहुं
जेना गंगा बहरेली कहियो शिवक जटा सॅ।

बहराइते लोकलक सौदागर
आ तकरा सॅ राजनेता लपकि लेलक।

हमहूं एहि जोग भेलहुं
जे आब बसै छी अहां हमरो जेबी मे।

मुदा,
व्याकुल जॅ होइ छी कौखन
तॅ लगैए जे तकर एक कारण अहूं छी।

कते दिन भ’ गेल कोनो प्रियजन कें चिट्ठी लिखना
कते दिन भेल जे जैह करी बस सैहटा करी
मुदा,
निर्जन प्रान्त मे भूत जकां रहै छी फदकैत
जनसंकुल समांग सॅ चट द’ भ’ जाइ छी एकात।

दूरक दुख सॅ कौखन देखाइत छी दुखी
कौखन अपने–अपने बताह जकां हॅसै छी
जखन कि बहन्ना नहि कोनो मौजूद चतुर्दिक।

बड खौंझाइ छी कहियो
तॅ कहै छी जे
हमर भव्य एकान्त कें अहां अन्हार केलहुं

मुदा तखनो
ई कहब हम बिसरि जाइ छी
जे लोक सॅ अहां अलोक केलहुं

जेना अहां बिसरि जाइ छी
जे वैज्ञानिकक मस्तिष्क सॅ बहराएल रही
जेना गंगा बहरेली कहियो शिवक जटा सॅ।

भूमण्डलीकरण

गाम बजैए नाम
मुदा सुनैए के?

——गामक लोक।

कने आर जोर सॅ बजियौ
परोपट्टा कें सुनाउ।

कने आर टाहि लगाउ
जै सॅ सुनाइ पडै सौंसे देश कें।

चिकरू
आर जोर लगा क' चिकरू
सौंसे पृथ्वी कें सुनाउ।

पृथ्वी माने की?
पढलाहा सब कें पुछियौ
तॅ कहत अमेरिका।
तॅ तकरे सुनाउ।

ओ जे सुनबैए
सैह टा सुनैत आएल छी
आब अहां अप्पन हुनका सुनाउ।

जोर लगाउ
जोर...

अरण्य–युग

नहि रहत, नहि रहत
धर्म–जाति–कुल–श्रेणी नहि रहत,
मुदा
लोकायत सेहो नहि रहत,चार्वाको नहि रहता।

नहि रहत, नहि रहत
घटाटोप यज्ञ नहि रहत, षोडषोपचार पूजो नहि,
मुदा
सलहेसक डीहो नहि रहत
भगवतीक, धर्मराजक पीडियो नहि।

नहि रहत, नहि रहत
बडका–छोटका करैबला खकसियाह करेज नहि रहत
मुदा
ठोर परहक गीत
आ, दिल महॅक उद्‌गार, सेहो नहि रहत।

देखबै–––
गाम–गामक हएत आब विकास

दिल्ली–गाजियाबाद उतरि क' लग आएत
गामे मे लोक कहत–'तेरे को मेरे को'
घरे मे हेतै आब सब कर्म

सब क्यो बनए चाहत धनीक
   माने तमाम सुख लूटि अनबा मे समर्थ
सबहक टांग घीचत सब धनीक
   सब सॅ नमहर धनीक हेबाक लिलसा मे।

देखबै–––
सब करत विकास।
किए क्यो पछुआएल रहत?

अन्त मे 1857

गुजरात
चलल छल कहियो
गांधी जीक संग कदमताल देने
आब सैह गुजरात
मोदी जीक तान पर नाचि रहल अछि।

महाराष्ट्र
जकर स्वप्नद्रष्टा तिलक लोकमान्य
———यों मोंछ यों पग्गडधारी,
राखी सावंतक डांड पर बेहाल सैह महाराष्ट्र
कहैए आब——बिहारी छें, भाग।

बंगाल
ओम्हर पसारने अछि नन्दीग्राम—दंगल
तँ एम्हर
दिल्ली
परमाणु—सन्धि लेल बाप—बाप करैए।

आ, एकटा अहां छी अइठाम
जे ताबडतोड मचा रहल छी जागरण———
हौ देश, चेत करह जी, चेत करह।

कोना करत चेत?
ओकरा होश छै जे चेत करत?

देश एखनहु आजादे छै महराज,
एखने कोना चेत क' लेत?

भ' जाउ पहिने तमाम—तमाम क्रियाकाण्ड
तखने ने फेर एतै
1857?

हिन्दीक अखबार

होश हेबाक चाही हमरा
हिन्दीक अखबार पढि क'।

विश्व भेल आइ 'ग्राम'
लेकिन से हमरा लेल नहि।
हमरा लेल तॅ विश्व भेल
यैह सटल–सटल दू जिल्ला।

लिय' जते समाचार लेब
घरढुक्की के, कनफुसकी के
नेता–हाकिमक मुस्की के।

नहि जनमल एखनो क्यो मिथिला मे
बिजनेसिया वीर
आ कि भिश्ती–बावर्ची–पीर,
तें पढ' तॅ पडबे करत हिन्दीक अखबार

लेकिन,
होश हमरा जरूर हेबाक चाही।

नीक समाचार

नीक समाचार कतहु सॅ भेटल
तॅ भेल
जे वाह !
धरती कतेक सुन्दर छै !

धरती रहि नहि गेलै अछि सुन्दर
बड–बड अवग्रह मे अछि ई ग्रह।
मुदा तैयो आदमी जीबैए
जे थोडे नीक समाचार बचल छै एखनो।

नीक समाचार कतहु सॅ भेटल
तॅ भेल
जे वाह !
हम एखनो बचल छी।

फुरसत के क्षण

ने बोनस दिय’ मालिक, ने पैकेज
ने बजट, ने गजट....

दिय’ जॅ किछु
तॅ दिय’———
फुरसत के किछु क्षण।

विनाशशील सभ्यता मे
रहियो क’ हम
रचना किछु रचबाक नियार केने छी।

शिशु

कनैत–कनैत लारू–बातू भेल शिशु
चुप भ' गेल अन्ततः, अपने आप।

अखियासि लेलक जे ओकर मांग–पूर्तिक
नहि छैक कोनो संभावना।

नहि सुनल गेल ओकर रोदन
कोनो व्यवस्था–परिवर्तन नहि भेलैक।

मुदा चुप भ' गेल शिशु अपने आप
एकर की माने भेल?
की भेल मतलब?

शिशु मानि गेल हारि?
बकसि देलक हमरा–अहां कें?

आ, कि शिशु भ' गेल वयस्क?
बूझि गेल रोदनक सीमा?

कानब
अपन निर्णय दोसरक हाथ मे सौंपब थिक
–––बूझि गेल शिशु?

कनैत–कनैत लारू–बातू भेल शिशु
चुप भ' गेल किए अपने आप?
एकर की माने भेल?
की भेल मतलब?

किताब

किताब, तों पडल रहिहह एहिना
अलमारीक झरोखा मे।

एहिना टुकटुक तकैत रहिहह हमरा दिस
एहिना चीरिहह हमर शून्य
एहिना हमर एकान्त फाडिहह।

किताब, तों हमर अतीत छियह
तोंही हमर भविष्य
तोंही हमर वर्तमान हेबह किताब,
सांझ अबैत–अबैत।

बहैए पसेना
चलैए तीव्र हमर श्वासक भाथी
चूर–चूर भेल जाइए शरीर श्रम सॅ
रोटीक लेल,असराक लेल, तन झांपक वस्त्र लेल
खटैत रहैत छी सगरो दिन।

ओम्हर,
गर्दमिसान मचौने अछि दौगला शिकारी सब
घरमुत्ता सब महामहावीरचक्र पाबि रहल अछि
देखहक किताब, कलम निपत्ता भेल जाइए
खोल मे बन्न भ' रहल अछि चश्मा
दौगलाक मूत्र मे गलल जाइए कागज।

एना मे आह,
कतए कोना रहबह?
के तोरा बचौतह, किताब।

थम्हह,घुरि आबि रहल छी सांझ अबैत–अबैत
तोंही हमर अतीत छियह,
तोंही हमर भविष्य।

दोहाइ हे पंचायती राज

बास दिय' चास दिय'
इन्दिरा आवास दिय'
दोहाइ हे पंचायती राज
बाप भेला मुखिया
बाबू खबास दिय'।

गहूम दिय' चाउर दिय'
पी०सी० किछु आउर दिय'
दोहाइ हे पंचायती राज
बाप भेला 'परमुख'
दुशमन–घर छाउर दिय'।

ट्रक दिय' कार दिय'
सन्मुख सरकार दिय'
दोहाइ हे पंचायती राज
बाप भेला 'अध्यच्छ'
उचितन अधिकार दिय'।

।।मुखिया–राज।।

¼,d½

मुखिया जी, मुखिया जी
पेट किए फुलिया?
धोधि किए झुलिया?

पंचायत के पुलिया
खरांत वसुलिया
सरकारी हुलिया
टिलिया रे फुलिया
सब भीतर बुलिया

तें, पेट फुलिया
तें, धोधि झुलिया।

¼nks½

दू 'असतर' मे झगडा भेल
बीच मे बी०डी०ओ० बगडा भेल
तीन 'असतर' पंचायती राज
एहि मे जनता के कोन काज?

कहथि डाक––सुनह हो भाइ
आसन चढि बैसलाह कसाइ
मुखिया पर जे कनखी मारय
तक्कर भोंट विधायक फाडय

जनता छी, तॅ जनता जकां रहू
आएत चुनाव तॅ अहूं अपन कहू

¼rhu½

सब सॅ दुर्बल दुक्खी राम

से भेल मुखिया, कोना चलत गाम?
सब सँ बलगर फल्लां बाबू
से रखता मुखिया कें काबू

नै तँ प्राण बाबुए लेतनि
एक्को कानुन संग ने देतनि
किता के किता मोकदमा ठोकब
हमर छी राज, अहां किए टोकब?

नन्दीग्राम–पंचक

जनता जागल भूमि ले' बाजि रहल दू टूक
जनवादी के हाथ मे एम्हर छनि बन्दूक
एम्हर छनि बन्दूक, दनादन गोली मारथि
टाटा–बिडला के खद्धा मे जन कें गाडथि
जे छल जनता केर पहरुआ, सैह अधक्की भेल
शोभथि श्री बुशराज–मुकुटमणि,देश भांड मे गेल ।।१।।

जे जनता कें गठित क' बनल छला बदशाह
सैह कहै छथि कुपित भ' जनता बड तमसाह
जनता बड तमसाह, सुनय नहि एको बतिया
बुश केर की छनि दोख, एतक लोके झंझटिया
छला मार्क्स के प्रबल प्रबंधक, आब बजाबथि झालि
आबह राजा, तंत्र सम्हारह, गां मे रान्हह दालि ।।२।।

गां मे लोकक खेत अछि, खेते थिक अबलंब
सैह कहै छथि बादशा छोडय जन अविलंब
छोडय जन अविलंब, कम्पनिक बैरक आबय
अपन मजूरी पाबि, देश के मान बढाबय
केहन देश ओ बनत जतक जनता होअय निःस्वत्व
संसद बौक बनल अछि, देखू राजनीति के तत्त्व ।।३।।

लोक छलै चुप आइ धरि, देखि रहल छल खेल
जनता के जे रहय आप्तजन, सैह गिरहकट भेल
सैह गिरहकट भेल, आब जन मैल छोडाओत
छोडत ने क्यो खेत, भनहि सब प्राण गमाओत
टाटा–बिडला के बस्ती मे, जनता नै क्यो हएत
जे बसतै से कुली–कबाडी, देश बेचि क' खाएत ।।४।।

सैह कहै छी, सुनह भाइजन, बूझह की थिक 'सेज'
तूं छह ककरा पक्ष मे, गांधी की अंगरेज ?
गांधी आ अंगरेज, दुनू मे बाझल झगडा
निर्णय नै झट हएत, बुझाइए जोडा तगडा
बचत कोना क' लोक, भूमि,से सोचि झखै छी
गांधी आ अंगरेज एतहु छथि, साफ देखै छी ।।५।।

बेबस जोगी

आइ मुकदमा काल्हि जमानत
ई नेता के शान
जे सुख भोगय ई दगुला सब
से भोगत के आन?

खन कंगरेसी आ खन संघी
खनहि जाति के संग
जेम्हरे ससरय जन–आकांक्षा
तेम्हरे उडय पतंग

बेबस अछि जोगी जे औखन
टुक–टुक देखि तमाशा
खन अछताबय खन पछताबय
बांटय वोट–बताशा

बुढबा नेता

नेताजी के आएल बुढारी
आगू पाछू भरल बखारी
मुदा स्वास्थ्य नै मन–अनुकूल
आ नै सेटिंग तूलमतूल
मन मे एखनो शौक अनेको
तृष्णा नै मुरझाएल कनेको

ता थइ नाचय बुढबा नेता
क्यो आगू बढि असरा देता
टिकट पाबि संसद मे जाएत
झाडा फिरि–फिरि मुलुक घिनाएत

परजा पर के दैछ धियान ?
जागह जोगी, करह गियान

जोगीलाल

जोगीलालक अद्‌भुत बानि
मन मे प्यास, बगल मे पानि

कुल–पुरखा के बहुत कमाइ
लेकिन एक्को हाथ ने आइ
ज्ञानक बात बहुत किछु करता
मुदा डेग नहि एक्को धरता
जे एहि जुग के रोग–बलाय
तै पर जोगी सदा सहाय

जोगीलालक लक्षण तीन
घरघुसना आ सदिखन दीन
युगसत्यक ई मर्म ने जानथि
बाप–ददा ले' एखनो कानथि

सोचि ने पाबथि आगुक बाट
संकट अयने ताकथि खाट
पांच करोडक कायावासी
वृत्त मुदा छनि सत्यानाशी

बाजू, जोगी कक्कर नाम
सब क्यो हेरू अप्पन गाम
जे जोगी कें ताक' जाएत
से अपने कें जोगी पाएत

मृतक–सम्मान

जीवित पिता कें पानियो ने देलह
मरल पर उपछै छह पानि
घर मे बुढिया हकन्न कनै छह
कोना भेटै छह सुख–चौन?

हौ भाइ जोगीलाल
नान्हिटाक जिनगी छह
एना कहिया धरि करबह?
हौ, ई दुनिञा ओही दिन नहि मरि जेतै
जहिया तूं मरबह....

कविता आ समाज

सम्मेलन के बड तैयारी
कवि सब अयला भारी–भारी

अपन–अपन सब कविता पढता
सुनि क' श्रोता गुनधुन करता
काव्य सुनौता हाली–हाली
प्रेमी पिटता अनधुन ताली

कविता सुनि क' सब घर जाएत
कवि के कविता बाट बिलाएत
अपन–अपन सब काज मे लागत
एको सुतलहा थोडबे जागत?

जोगी कें जॅ पुछियनु भोर
बजता सब कें क' क' सोर–
अलर–बलर सब किदन सुनेलक
झुट्ठे सब क्यो निन्न गमेलक

पंचवटी

अपन निन्न क्यो दोसरा खातिर
राजी खुशी गमाबैए।
आर क्यो तबधल धरती कें
शीतल चमन बनाबैए।

कियो आस मे धैरज धयने
आंखिक नोर सम्हारै छै।
कियो हृदय पर पाथर रखने
कुल के कर्ज उतारै छै।

ई दुनियां छी रंगमंच
आ जिनगी ई चतुर नटी
ई छी जिनगिक पंचवटी।

एक बाट पर माया–ममता
एक बाट पर शूल
कोनो बाट पर कांट बिछाओल
कोनो बाट पर फूल।

फूल–कांट कें सम पर सधने
ई जीवन के चतुर नटी
ई छी जिनगिक पंचवटी।

तालक संग मिलाबी ताल

सुख–दुख अहिना लागल रहतै
जे हारत से अनका कहतै–

बन्धु समय ई बडा विकट अछि
अंतकाल चलि आएल निकट अछि
बीति रहल अछि कलजुग घोर
कते लगायब झुट्ठे जोर
चलू, कतहु चलि पलथा मारी
जतबे जी ली ततबो भारी

मुदा एना की दुनियां चलतै?
भागि पडेने बाट निकलतै?
जा नहि समयक गति कें बुझबै
दिन–दुर्दिन कें कोना समुझबै?

जे धारा अनुकूलित केलक
सैह कथू दुनियां कें देलक
कह कबीर बस लक्कड चाही
तही बलें दुनियां कें थाही

एना रही जुनि अहँ बिसनोन
कनियों घोर करी जुनि मोन
बूझी गति कें समुझी हाल
तालक संग मिलाबी ताल

कविता लिखू रिमझिम

कविता लिखू रिमझिम
भाव कें दियौ अभिव्यक्ति
चेतना कें कने भौतिक तल पर लाउ

सौन्दर्य अहांक भीतर जे व्याप्त,
तकरा वातावरण मे कने छिडियाब' दियौ।

कविता लिखू
से नहि, तॅ चित्र बनाउ
से नहि, तॅ संगीत बजाउ
से नहि, तॅ ध्यान करू।
किछु मुदा करू जरूर, रिमझिम।

समय बड ओठर भ' गेलैए
चारू दिस पसरल छै नकार
लिप्सा जें कि बढलैए,
घटलैए समस्वरता।

अपन हाजरी बनाउ रिमझिम
जे एहन जालिम समय मे
एकटा अहूं भेलहुं।

रस्ता कने ताकू
निविड अन्हार मे
इजोतक विकल्प असमाप्त।

मुकुट

दुनियां बहुत बेदिल छै
हौ बाबू जोगीलाल,
कते तोरा हम कहबह
तों की कम बुझक्कड लाल?

बड मुश्किल सॅ कतहु–कतहु
दिल मे दिल मिलै छै
आब, छोडह ई बात जे–
तै सॅ इन्द्रासन हिलै छै।

मिलल जॅ छह दिल मे दिल
तॅ केवल अपन 'पगडी' दुआरे
एकरा तोडह नहि
ककर के होइ छै सुत–वित–नारि
हौ, अइ मुकुट कें छोडह नहि।

उत्तर–क्रिया

श्वास–श्वास मे बसल जे छली आरपार
से आब कोन नगर बसै छथि,
बूझल नहि अछि।

कोन घाट नहेली गंगा नहाइ–काल,
कोन सबारी पकडि क' पहुंचली नबका नगर
आ कि पयरें पहुंचली,
जाहि बाटें गेली अपना देहें
ओहि पर दूभि जनमल आ कि पीचरोड बनल,
नहि अछि बूझल किछु
किछुओ जानल नहि अछि।

तें कि मानि लेब जे ओ जे गेली
से सरपट चलिये गेली?

अखाढक पहिल बुन्न पडल अछि हृदय पर
तं पडलीह अछि मोन
छथि कतौ एतहु हमर अतल मे,
तलातल मे
तें तं अभरलीह अछि।

कतौ हो ओ नगर, ओ पृथ्वीए पर अछि
मानत क्यो जे ओतहु हमर एक घर अछि?

वन्दिता

पलछिनक लेल तं भेटै छली
देह मे साटियनि कि मोन मे–
एही असमंजस मे झहरै छल उत्ताप।

अहलदिली मे भरि–भरि अनसम्हार
क्षण जोगेबाक चेष्टो नै क' पाबी तैखन।
पलछिनक लेल भेटै छली
अपसोच,
से पल अहिना बीति जाए।

क्षण ओ जोगा सकलहुं नहि कहियो
अही विकलता सॅ जनमैए फेर–फेर उत्ताप।

हे उत्ताप
कहिया तूं झहरबह ओहि एक क्षण मे
आ, झखारबह हमर असमंजस ?

दीदारगंजक यक्षिणी

अहांक जांघ कें जे क्यो नांघथि
हे सुन्दरि,
हुनक समस्त मनोकामना होइन पूर।

अहांक अपरुब सौन्दर्यक स्तुति मे
यैहटा तॅ कहल जा सकैए निर्व्याज——

हे सुन्दरि,
जे क्यो धॅसथि अहांक स्मिति मे
से एकर पार उतरथि।

अर्द्धनारीश्वर

दू दिनक लेल तॅ आएल छलहुं
दिबाल पर साटि गेलहुं अपन बिन्दी।

ई बिन्दी छी कि अहांक दिल
छूबै छी तॅ
धकधक करैए।

ई कोना हएत
जे कतहु हम रहब
आ अहां नहि रही..
हएत तॅ बरु होउ
मुदा, तकरा अहां कोना करब मंजूर?

बिन्दी कें देखै छी
तॅ अहांक भाल देखाइए
अपन गाल कें छूबै छी
तॅ अहांक गाल बुझाइए।

कोना क’ सीता दाइ

(महेन्द्र मलंगियाक नाटक ‘ओ खाली मुंह देखै छै’ देखलाक बाद)

आगू पाछू भरिया जेतनि
बीचोबीच कहरिया जेतनि
एना क’ सीता दाइ सासुर जेती........

बांसक फरकी पर लेटल जेती
गोइठा—करसी पर गेंठल जेती
छोटका भाइ मुंहबत्ती देतनि
आङ समाङ ने संग क्यो जेतनि......

मिथिला—वासिक भक्क ने टुटतनि
जे बांचल छनि, सेहो लुटतनि
अपन अपन सब नरक बनौता
बेटिक खून मे खूब नहौता.......

तिलक—दहेज ने छोडल जेतै
यैह रोग अइ देस कें खेतै
कहियो राम कसैया भेलनि
जनको आब मुदैया भेलनि......

कोना क’ सीता दाइ सासुर जेती
ककर ककर ओ भार उठेती
ककर ककर ओ भूख मेटेती
किए ने भ्रूणहि मारल जेती??

गौर पूजैत कन्या लोकनि

कन्या लोकनि जखन पूजैत छथि गौर
तुहिन–कण बनि–बनि
हुनका सभक करुणा
पृथ्वीक मुहेंठ पर खसैत छैक।

ई बात भिन्न
जे तुहिन–कणक सम्पूर्ण आर्द्रता
सोंखि लैए बसात पहिनहि
आ, पृथ्वी पर तकर तरंग–मात्र पहुंचौए।

ध्यान देबै तॅ देखब–
कन्याक गौर पूजैत काल विवेकी लोकनिक ह्रदय
बडा कातर भ' गेल करैत छै।

सौंसे पृथ्वीक संचालन
कन्या लोकनि अपन एही कातर तरंग सॅ
क' रहली–हे।
जखन कि सही बात छै
जे पृथ्वीक सब कन्या नहि पूजैत छथि गौर।

मुदा
गौरो पूज' बाली कन्या
जॅ क' सकैत छथि एतबा
तॅ आगि पजार' बाली कते करतीह तरंगायित?

नहि कलाकार, नहि
असली बात ई छै
जे हमर पृथ्वी एखनो सुरक्षित अछि।

धर्मयुग

मुंह टेढ क’ क’
भजन गबैत अछि बालीवुड
हरे रामा, हरे कृष्णा.....

बड बेस बड बेस
भजनक चलन उठि गेल छल।
आब
टेढ मुंहक आकर्षण सॅ
लकबामार नाचक फैशन सॅ
फेर चलती पकडि रहल अछि
भजन।

धर्म की जय हो
जयजयकार हो देवता लोकनिक।

आस्तिक

ओ लोकनि पूजा नहि करैत छथि
एतय धरि जे
बजरंगीक फोटोबला कलेन्डरो धरि
राखैत छथि बेडरूम मे,
ने बांहि मे ताबीज,
ने अंगुरी मे औंठी।
मुदा पुछबनि जॅ तॅ कहताह–
विशुद्ध आस्तिक थिकहुं,घनघोर।

नाच–गान, उछल–कूद कें ओ लोकनि
कहै छथि पूजा,
नहि–नहि, ओकरा ध्यान कहै छथि।

देवी–देवता,पुरहित–पंडितक नामें
बेला–कुबेला उगलैत रहै छथि आगि
मन्दिर आ मस्जिद कें
एक्के रंग अनुपयोगी बतबैत छथि।

हॅसैत रहै छथि खिल–खिल
बढले रहै छनि हाथ हरदम
दोस्ती निमाहबा वास्ते,
लादि जॅ दियौ सौंसे पहाडक बोझ
गदहा–जकां मस्ती मे झूमैत पार करता
योजन–योजन मार्ग।

एह,
छिट–छिट छिटकैत रहै छनि आंखि बाटें जिनगी
सदरि काल।
समुच्चा सृष्टिक प्रति हृदय मे छनि–
कृतज्ञता–भाव।

जीवन कें मानै छथि अहोभाव,
से तॅ चलू ठीक
मुदा, मृत्यु कें कहै जाइ छथि उत्सव।

एह,
सौंसे पृथ्वी ग्रह
हिनका लोकनि दिस
बडे हियाब सॅ ताकि रहल अछि
बडे लिलसा सॅ।

बाढि

बाढि एलै भरि गेलै पानि
आ, उजडल गामक लोक
चारूकात हहारो मचलै
सबठां पसरल शोक

खेत डुबल, खरिहानो डुबलै
डुबलै घर के अन्न
चुल्हा टुक–टुक ताकि रहल अछि
कानय जांत हकन्न

ककरा के देखय आ बचबय
सबहक जान बलाय
खुट्टा पर बान्हल कनैत छनि
जोगीलालक गाय

बाढि–अनुदान

सुदेसर डूबि क’ मुइल
तकरो एक लाख
मुर्सिद कें सांप कटलकै,
तकरो एक लाख
ठाकुर मुइल भैयारी झगडा मे,
तकरो एक लाख।

एक लाख तकरो
जे भूख सं मुइल,
एक लाख तकरो
जे नदी फिरैत–फिरैत मरि गेल।

हौ बाबू जोगीलाल,
आब तं
गरीब कें मरैए मे फैदा छै।

बाढ़ि–प्रबन्धन

उचिते टुटलै बान्ह
हुहुआ–हुहुआ क' चलैए रेती।

गे रेती,
कैले बेकसूर पर करै छें हाकरोस
परुकां एबें तैयो हम सब एतही रहब
तेसरां एबें तैयो।

गे रेती,
छौ पैरुख तं रजधानी जो–

दूमहला पर छै ततय ए.सी.हाल
जतय चलि रहलौए ऐखन
बाढ़ि–बचाउ–मीटिंग।

कत्ते लोक चिन्ता करओ

अन्तरिक्ष मे जा क' मुइलीह कल्पना चावला
तें कि लोक अन्तरिक्ष जाएब छोडि देत?

हमर पिता कहथि–
पानिक हेलनिहार पानिये मे मरैत अछि
गाछक चढनिहार गाछे सॅ (खसि क')

बड बेस बड बेस पिता

मुदा,
जीवनक जीनिहार जीवने मे नहि मरि जाइछ?
आ, मृत्युक व्यवसायी मृत्युए मे?

कते लोक चिन्ता करओ?

कोन उपायें छोडती माय हमर संग

बहुत मनसूबा सॅ
देने छल हेती जन्म।

कतेको रास नियार–भास
कतेको कतेक आस–मनोरथ
घुमडैत रहैत छल हेतनि हुनका चतुर्दिक,
ओहि नव मास मे,
जखन हम हुनका गर्भ मे रही।

ओहि एक कालखण्ड मे
जतेक जे माय रहल छल हेती
कल्याणक योग्यताधारी
चौरासी लाख योनिक मध्य,
सभक बीच रहल हेतनि एक मूक प्रतिस्पर्धा।

अपन अस्तित्व कें तरासि–तरासि
सक्क भरि चिक्कन–चुनमुन गढि–गढि
ओ हमरा देने छल हेती आकार।

एहि सृष्टि कें अपन 'अन्त्यम' दाय देने छल हेती
हमरा रूप मे,
आ, प्रतिस्पर्धा मे लेने छल हेती भाग।

कोना हम मानब
जे माय हमर मरि गेली
आ छोडि गेली हमर संग?

जा हम जीबैत छी
कोन उपायें छोडती ओ हमर संग?

समय सॅ बाहर घटित घटना माय

के अछि साधारण?
के सामान्य?
नमित के अछि?
के विनयी?

बड–बड पापी देखलहुं, बड–बड पुण्यात्मा
के अपना कें मानै लेल तैयार अछि
तुच्छ पापी? छोट पुण्यात्मा?

देवतादि–वर्ग तॅ सेहो
सुनै छियै जे
जे जते भयानक पापी होअय
शरणागतोपरान्त तकरा
ततबे पैघ पुरस्कार दै जाइ छथि।

एहना मे
के अपना कें मानय छोट?
के नमित?

राजनीति मे सामाजिक न्याय
साहित्य मे दलित लेखन
अध्यात्म मे हाइटेक गुरु
परिवार मे मौज–मजा–तंत्र
आर कथी–कथी मे कथी कहांदन
–––तकर युग थिक ई।

एहना मे
के अपना कें मानय छोट?
के नमित?

मुदा, माय
तोंही एक हमरा भेटलें सौंसे मुलुक मे
सौंसे ब्रह्माण्ड मे तोंही एक भेटलें
ने तोरा–सन देखलहुं छोट
ने तोरा–सन नमित।

तोरा–सन साधारण ने देखलहुं
ने तोरा–सन विनयी।

जिनगी भरि
कतए नुका क' रखने रहलें
अपन पैघत्व?

तोहर नोर सँ भीजल अछि
देवता लोकनिक पीडी
तोहर हाथ
एक–एक बाबू–भैयाक चरण–स्पर्श केने अछि।

फुलेलें तों तँ सिङरहारक फूल जकां
झखडलें तों तँ दसगर्दा आम जकां
तोहर ममता, तोहर ऊर्जा
उत्सर्ग होइत रहलौ दस लोक लेल
दस लोक=जेहन अपन, तेहन परार

तते तों निर्वैयक्तिक छलें?
तते छलौ तोहर आत्माक विस्तार?

एहन कोनो लोक देखल नहि कतहु
जे अपन बेटो कें आशीर्वाद दै मे संकोच करय...
एते छोट क्यो लोक होअय?
एते तुच्छ क्यो बूझय अपना कें?
की कारण, माय?

से की तों देखि रहल छलें
हमरा भीतर प्रस्फुटित ब्रह्माण्ड?
प्रतिफलित होइत तोहर अप्पन अनुभूति हमरा भीतर?

से की तों
साक्षी भ' जाइ छलें
एक–दोसरक भीतर घटित होइत जीवन्तताक?

से की तों
तते तते रूप मे
अभिव्यक्त भ' चुकल छलें

एहि ब्रह्माण्ड मे
जे कनियो टा रौद
अपना लेल बचा क' राखि नहि भेलहु?
कनियो टा रौद कतहु देखहिन
कि नमित भ' गेल करें?

प्रेममय–प्राणमय जीवनक
की यैह छलै कारण–सूत्र
जकरा तों सत्तर हाथ नमरल
अपन जीवन–वर्षक उदाहरण द्वारा व्यक्त करै छलें?

से की तों तते पैघ छलें
जे दोसरक पैघत्व–दाबी
तोरा नेनाक ठुनकब–सन लागौ
आ, नितान्त वात्सल्यमयी बना दौक?

से की तों बीज छलें
विशाल गाछ मे अभिव्यक्त भ' चुकल बीज,
जकरा लेल कि अपन निज कोनो आत्म होइछ नहि।

की कारण, माय?
अहंकारक नान्हि–नान्हि पिजडा सब मे जकथक
अपन–अपन महाभयाओन दुर्ग मे बन्दी हमसब
छगुन्ता मे छी घेराएल–
कोना तों पैघ मानलें हमरा?
आ, अइ लोक कें?
आ, किए हमसब मानै छी अपना कें पैघ?

से की तों
समय सॅ बाहर घटित भेल
कोनो एक घटना छलें?

समानान्तर सृष्टिक
सुपुष्ट संस्करण छलें
एहि सभ्यताक,
जकरा दुर्भाग्यवश
ई शताब्दी पढि नहि सकल?

प्रभास जी

प्रभास जी चलि गेलाह।

भदबारि बितलाक बाद जेना मेघ चलि जाइए
सांझ पडलाक बाद जेना सुरूज
पतझाड बितैत–बितैत चलि जाइए सबटा पात
अकम्प दीपशिखा जेना
तेल सठला पर चलि जाइए

प्रभास जी चलि गेलाह।

ooooo

छोडि गेलाह प्रभास जी
समयक शिलाखंड पर बेस मोटगर डिडीर
(अपन कायाक अनुरूपे)

जाहि बाटें गेलाह ओ से झक–झक देखार पडैए
मैथिलक चलल बाट कतहु एतेक झक–झक देखार हो?

सृजनक तितीर्षा–रस मे कुंडाबोर ओ
जुमा–जुमा क' फेकैत छला अपन ऊर्जा–दीप्ति
अहां ध्यान देने हएब
हुनका चतुर्दिक मौजूद लोक सब
नेहक विद्युत्तरंग सॅ आविष्ट अनुभव करथि।

अहां जॅ हुनका निकट जइतहुं आश्चर्य होइत अहां कें–
जतबा पारदर्शी ओ आइ भेलाहे
थोडबे कम पारदर्शिता तहियो छलनि,
जहिया प्रभास जी नामें जानल जाथि।
ooooo

छोडि गेलाह अछि प्रभास जी
बहुत रास काज, बहुत संकेत,
दायित्व बहुत तॅ पूजियो कम नहि।

सब क्यो तॅ एतबा छोडिये क' जाइत अछि?

जाइत हएत,
मुदा छोडैए अपन सन्तानक लेल, विरासतदारक लेल,
हमरा लेल तॅ नहि।

हुनकर सन्तान सॅ तॅ हमरा परिचयो नहि अछि
जखन कि हम हुनका 'भाइ' कहियनि।

चला–चली

समर शेष रहि गेल
चलि गेला श्री माहेश्वर।

भीतर सँ शुद्ध बुद्ध रहथि
मुदा बाहर,
जथगर माया मे लटपटाएल।

हम हुनका पर आजिज होइ–
जकरा विष्ठा कहि–कहि बरजै छी
तकरे पर ठाढ भ' क' गरजै छी?

माहेश्वर छला सर्जक, ध्यानी छला
मुदा संगत हुनक राजेन्द्र–सन ज्ञानीक सँग।
(ज्ञानी भुगते ज्ञान करि
ध्यानी भुगते रोय–बतर्ज कबीर।)

राजेन्द्र भोगथि ज्ञान करि–करि आ माल चोभथि
कानि–कानि भोगलनि श्री माहेश्वर
आ अपटी खेत मे गमौलनि प्राण।

समर शेष रहि गेल
चलि गेलाह कबीर।

मृत्यु मांगतह जिनगी

एतह जखन मृत्यु
तॅ मांगतह तोरा सॅ
तोहर जिनगी।

जिनगी जॅ रहलह नहि संग मे बाबू,
कतए सॅ लाबि क’ देबहक ओकरा, बाजह।

नहि एलह अछि,
एखन नहि एलह अछि मृत्यु,
किए एना रोज–रोज मरै छह?
एह, तोहूं मुदा, अतत्तह करै छह।

जोगी हौ, मृत्यु एतह
तॅ सब सॅ पहिने
जिनगिए मांगतह।

द्रष्टा–भाव

ओहो गीत सुनैत छला आ हमहूं गीत सुनैत छलहुं
ओहो बाध घुमैत छला आ हमहूं बाध घुमैत छलहुं
दुख–पीडा भोगैत छला तॅ से हमहूं भोगैत छलहुं
ओ जीवन जीबैत छला तॅ हमहूं सैह करैत छलहुं।

ओ अपनहि मे लीन रहथि ता हम भीतर खुजि गेल करी
ओ भोगै के सुख मे रहथि ता हम भोगब देखय लागी
ओ सुख मे संलिप्त रहथि ता हम व्यापक सुख ताकै छी
जा–जा ओ भीतर हुलकथि ता हम चारू दिस झांकै छी।

अपन नेह कें अपन नेह टा ओ सब दिन समझैत रहथि
अपन छोह अपने टा होइ छै, से हम कहां बुझैत रही?
एक–एक अनुभव हमरा अपना सॅ बाहर ठेलि दियय
एक–एक अनुभव हुनका अपना कें आर महान करनि।

अपन भोग के भोक्ता बनि क' ओ सब दिन चुभकैत रहथि
अपन भोग के भोक्ता भ' हम विश्व–समाहित भेल करी
बडा कठिन छल समय ओ रोजे जील करथि आ मुइल करथि
बडा कठिन छल समय रे भैया, हम ओझरी सोझराएल करी।

ओ अदृष्ट मे पडल रहथि, हम दृश्यमान के संग रही
ओ सपना देखैत रहथि ता हम सपना बनबैत रही
बेर–बेर ई दृश्य देखैते समय बितै छल द्रष्टा के
आबय काल, झखारय हुनका हम तॅ बुझू जे तंग रही।

निर्गुण

फाटल केथरी ओढि सेहन्ता
व्यर्थ जनम के दाबी
संगम–संगम जरय मुमुक्षा
समय बडे असबाबी।

जंगल–जंगल रंग उडै छै
गाम–गाम मे सपना
कालचक्र कें नोंतय निष्ठा
ई केहन आदि कलपना।

निकट–निकटतर दूर–दूरतर
धन्य हे स्वप्निल आशा
दग्ध भेल अछि अवचेतन मन
प्राण भेल दुर्वासा।

व्यपगत

फेर वर्ष एक व्यपगत भेल
किछु त्यागल, किछु सिर पर लेल

कते जतन क’ जिनगी खेपल
चानन बुझि–बुझि कीदन लेपल
समय ने थाहल कनियों गेल
फेर वर्ष एक व्यपगत भेल।

किछु त्यागल, किछु सिर पर लेल
जकर भाग जे छल, से देल
किछु दुख छल से भेल पहाड
तिल के कण, से लागल ताड

जे खेपल, से खेपल गेल
फेर वर्ष एक व्यपगत भेल।

तीरभुक्ति

कर्म–कुकर्मक अथ–उत मे जे
ओझराएल होथि
से पढथु पेनल कोड।

आंखिक आन्हर लोकनि राजनीतिशास्त्र पढथु
कानक बहीर लोकनि मानवशास्त्र।

थाकल जनिकर होइनि तन–मन
थाकि गेल होइनि भुजाबल
से पढथु खगोलशास्त्र।

जीह आ जांघ–मात्र के उपासक लोकनि
मनोयोग सॅ एकबेर पढि लेथु कामशास्त्र।

वधिक–बलात्कारी लोकनि कर्मकाण्ड पढथु
नेता–अफसर लोकनि नृतत्वशास्त्र।

जनिका अपन जीवित रहबाक
कोनो तात्पर्य बुझना जाइनि नहि द्वैधवश
से कने हियाब सॅ कविता पढथु।

हम तॅ मुदा,
अहीं टा कें पढब जीवनमयि

अहींक आंखि सॅ सीखब व्याकरण
अहींक कान सॅ संगीतशास्त्र।
एह, बिरथा जनम गमाओल अनेर पढि–पढि

आब तॅ हम पढब
अहींक चौबगली छिडिआएल इजोत।

मिथिलाक लेल एक उदास गीत

पन्नाक पन्ना खाली गेल
जेना बीतल हमर जीवनक दिन सब अकारथ

जेना हम अपने कें सम्हारबाक कतरब्योंत मे
बिगाडैत रहलहुं अपन ऊर्जा
सदति रहलहुं धरफडी मे
आ, अकानलहुं नहि कहियो अपन पदचाप।

अपन पदपंकजक सिन्दूराभिषिक्त अल्पना
बना जॅ दीतहुं हम एक–एक पन्ना पर
ओहो पन्ना कविता सॅ कम मर्मस्पर्शी नहि होइत।

अपन–अपन पयरे अक्सरहां
एवरेस्टक शिखर भेल करैत छैक
रस्ता तॅ होइ छै जेना एक रोचक मनोरंजन।

¼n½

अपने कें सम्हारबाक चौकीदारी मे
बीतल अनेक बर्ख गुलामी करैत।

कहियो कहां चेतौलनि मिथिलो?
जे कि हमरे जटाजूट मे बसै छलि
मृदुकल्लोलिनी,
जे कि निज हमरे चेतना सॅ
भाफ बनि क' छुटैत छलि,
कहां हमरा चेतौलनि मिथिलो?

सैह तॅ सब सॅ पैघ संकट छै
भूमंडलव्यापी जल्दी–जल्दीवाद
कहां देलक पलखति
कि हम अपन आत्मविस्तार मे उतरी।

हम अहीं कें संबोधित होब' चाहै छी
रमानाथ बाबू,
किए हमरा पलखति नहि भेल
कि हम अपनहि हिस्साक पेटी कें
अपनहि नहि खोलि सकलहुं
जखन कि चाभियो हमरे लग छल, पेटियो हमरे लग
बन्न छल जाहि मे हमर अस्मिताक लिलसा तमाम।

किए हम खोलि नहि सकलहुं?

¼rhu½

ई कविता उदास करैए हमरा
तँ अहूं कें कने करुणार्द्र बनौने हएत।

उदास जँ करए लागए कविता
तँ बुझबाक थिक
जे होश मे एबाक मांग कएल जा रहल अछि।

किए हम खोलि नहि पौलहुं बाकस?
किए हमरा पलखति नहि भेल?

किए हम बितौलहुं बेहोश भेल एतेक एते बरख?
खाली छोडल एत्तेक एते पन्ना?

विचित्र बात छै—
जतए हम खतम केने रही उनैसम शताब्दी
बीसम शताब्दी सेहो ओत्तहि,
एकैसम सेहो
बाइसम सेहो ओत्तहि करबा पर बिर्त छी।

कोल्हुक बरद?

नहि, नहि।
कोल्हुक बरद तँ आब रहल नहि,

हमरा कोनो दोसर उपमान ताक' पडत।

मुदा,
हम अपने की सम्पूर्ण विडम्बनाक
उपमान–प्रतीक–मोहाबरा अपने नहि छी?

¼pkfj½

मिथिला हमर नस मे बहै छलि
लाल रक्तकण जकां।

हमरा लोकनि
एक दोसर सॅ कहियो अ'ढ कएल नहि।

मुदा, जुलुम बात
जहिया कहियो हम बौएलहुं अकाबोन मे
कहां दिशा बतौलनि मिथिलो?

जहिया कहियो क्यो कतहु बौआइए अकाबोन मे
दिशा फुटैत छै सदति अपने भीतर सॅ–से एक बात।
दोसर जे अपने भीतर आएल होश अक्सरहां
युग–परिवर्तनक नामें इतिहास मे अंकित होइछ।

किछु मुदा भेल नहि मिथिलाक अछैत।
बिसरल रहलहुं हुनका तेना क' अलबटाह
जेना अपने श्वासक आरोह–अवरोह सॅ लोक लापरबाह।

¼ikp½

आंखि खोलि क' ताकै छी
तॅ पैघ–पैघ टीला सब देखार पडैए
पैघ–पैघ चर–चांचर–दियारा सब।
झुंड–झुंड नरमुंड सब
अपना–अपना बेगरतें किलोल करैत।

देखै छी–
दूर क्षितिज लग एकटा जहाजक मस्तूल
जे क्षीर–सागर कें चीरैत
नहुं नहुं अदृश्य भेल जाइए।

मिथिलाक बीसम शताब्दी थिक ई?

आ कि हमरा सभक सम्पूर्ण अतीत
सम्पूर्ण स्मृति, धरोहर सम्पूर्ण
अपन अन्तिम यात्रा पर अछि?

¼No½

हमरे चेतनाक दोमट सॅ जनमल छल
ई छांहदार वृक्ष सब
जकर एक–एक डारि–पात काटि–काटि
हम अपन पशुवर्ग कें खोआओल अछि।

राजा शिवसिंहक पगडी कें हम
लुंगी बना क' पहिरल अछि अपन एकान्त मे।

अपन एकान्त मे हम
कहियो नहि सुन' चाहलहुं अछि अपने अबाज।

मिथिला हमर तन–मन मे बसैत छलि
मुदा व्यसनी हम तेहन
जे अपने तन–मन खखोडि–खखोडि
समिधा जकां झोकलहुं अछि
बेहोशीक आबा मे।

¼Ikr½

सौंसे पृथ्वी,सम्पूर्ण देश, समस्त समाज
हमर बेहोशीक केलक अछि अभ्यर्थना,

जें कि बेहोश लोक
नीक उपभोक्ता भ' सकैए
हाट–बजार मे घुमैत रहि सकैए आनन्दमग्न।

सौंसे पृथ्वी, जें कि आइ बनियांक गछाड मे अछि
एहि महानाटक मे हम
अदाय क' रहल छी नीक गॅहिकीक रोल।

बात ई भिन्न
जे लटुआएल झूर–झमान मिथिला
हमरे आत्मा मे थरथराइत छथि
पीपरक पात जकां तमाम समय।

सौंसे पृथ्वी क' रहल अछि हमर बेहोशीक अभ्यर्थना
जखन कि
अपनहि पद–पंकजक सिन्दूराभिषिक्त अल्पना बना क'
टांगि जॅ लीतहुं हम अपन कोठली मे चौबगली
सेहो बनि सकैत छल
हमर जागरणक कारण।

विद्यापति

जनमल छला कर्मकाण्डक घटाटोप अन्हार मे।

भरि क' फुला ल' सकथि अपन छाती
ततबो धरि नसीब रहनि नहि लोकतांत्रिक हवा।

तीन तागक जनउ जे पहिरथि परम पवित्र
से बेचारेक तीन बयसक आजादी रखने रहनि बन्हकी।

स्मार्त्त ग्रन्थ सभक पर्वताकार मठ तर मे पिचाएल
विद्यापति
ग्राह–ग्रसित गज जकां किलोल करथि–
कखन हरब दुख मोर
कखन हरब दुख मोर....

दुख क्यो हुनकर हरि नहि सकैत रहनि।

विद्रोही छला विद्यापति
कुलबोरन बहराएल छला
शिष्ट–जन–पथ–प्रदर्शक प्रवर वंश केर।
अतः
दुख क्यो हुनकर हरि नहि सकैत रहनि
बाजि नहि सकैत रहनि क्यो
सहानुभूतिक दू बोल।

आखिर कोना होइतय मान्य
जे सर्वशास्त्र–निष्णात विद्यापति
'भाखा' मे रचए लागथि कविता?

अभिमानपूर्वक साबित करथि
देसिल बयना कें सबजनमिट्ठा?
कोना होइतय मंजूर
जे 'लोक' के सम्मान मे मुखर होअय शास्त्र?

समय केर निरन्तरता मे
केन्द्रविन्दुक थाह तकैत विद्यापति
बेर–बेर भुतिया जाथि बिसफी सॅ सरिसवपाहीक बाट।

बेर–बेर उडि जाइनि कपूर जकां न्यायशास्त्र
आ, जाठि जकां ठोका जाइनि
लोकशास्त्रक चौपालगाथा
चौपालक प्राण–रस मे भीजैत विद्यापति चहकथि कोना
जेना कदली–वन मे फुदकैए चिडै–चुनमुनी निर्द्वन्द्व।

महामहोपाध्याय गुरुजनक अभिशाप रहनि
आठो पहर माथ पर सबार
नहि बनि सकबह पंडित कहियो
'कवि' हेबह 'कवि'

आ, एम्हर
अनन्त जनमक पियास सँ व्याकुल जेना
मिथिलाक सदानीरा सँ
भावक आर्द्रता मांगथि विद्यापति।
मनुष्य जकां सोचबाक अभ्यास करथि
पंछी जकां गयबाक।
पंडित सेहो बन' चाहथि सहज–संभव
मुदा संवेदन–क्षम रहिये क' मथ' चाहथि शास्त्र।

ओते पैघ विद्यापीठ आ, एते निष्पाप चेष्टा!

विचित्र छला विद्यापति
जुलुम छला!

राजा–रानी भइयो क'
'प्रेम' कएल करथि हुनक गीतक पात्र।

आकुल–व्याकुल विरह मे घुलथि रूपनारायण
लखिमाक प्रणय–कलह मे खिन्न भए।

डेग–डेग फुदकैत स्नेहातुर कृष्ण
दस हज्जार बेर उचारथि राधा–राधा नाम।
वेणु के एक–एक गुंज पर
बीस–बीस रासि तोडि पडाथि मुग्धा–प्रगल्भा
विद्यापतिक गीत मे।

सुनल अछि–

राजमहलक भूल–भुलैया के छला ओ दरबारी
तखन किए ताकने घुरथि समर्पण
मारिते रास मांसलता–अश्लीलताक बीच?

सुनल अछि–
रोम–रोमक बान्ह–छेक तोडैत लखिमा ठकुराइन
बाउग भ' गेल करथि पद्मपराग जकां
विद्यापतिक चेतनाक रससिक्त पथार पर।

कोना भेल छल हएत ई सब संभव?
कोना?

कोना
माटिक मुठला मे पाबथि शिवक छवि विद्यापति
आ कि दीन–दलितक आङ–समाङ मे?
पाथरक मुरूत मे देखथि अपरूप रूप
आ कि जीवन्त देहक सीमा मे?
एहि मे? कि ओहि मे? कि एहि मे?
स्मृतिहीनताक पुरान मरीज जकां विद्यापति
बिसरि जाथि रहरहां
मनुक्ख आ देवताक अन्तर
अन्तर स्त्री आ राजमहिषीक।

दरिद्रा आ बेगरता सॅं झूर–झमान
घर छोडि पडा गेल करथि हुनक महादेव।
टोले टोल जोहैत कानथि गौरा पार्वती–
कतय गेला? हमर भोला कतय गेला?

दूटा रहनि बेटा शिव कें
जखन कि लोटा रहनि कुल्लम एक
रोज फसाद मचय बालबोध लोकनि मे खाइत काल।
अर्थचक्रक कुगति सॅं सीदित मन
अपस्यांत चातक जकां भरि–भरि कानथि विद्यापति।

जते दुखी छला हुनक भोला ओढरदानी
ततबे तितीर्षा रहनि विद्यापतिक छटपटी मे।
अन्न मांगथि, चौन मांगथि
जनकण्ठक मुक्ति मांगथि विद्यापति।

मुदा, आह
पुरुषत्वक परीक्षा मे ठोकल–बजाएल बहराएल छला,
शुद्धाशुद्धि–निर्णयक पारखी छला विवेकधर्मा
झंझटि देखू जे तैयो
देह कें भार बूझथि, दुनियां कें भव–सागर
धीपल खापडि पर भुजाइत जीत माछ जकां
तलमलाइत छला बेहिसाब–
तेना भयाक्रान्त क' देने छलनि हुनको
पापी पंडा, दुष्ट दैवज्ञ सब मिलि क'।

निर्मल गंगा बहै छलनि जनिकर प्राणक आर–पार
से विद्यापति
गंगा नदी मे पयर रखबा मे भयभीत होथि।
सैह देखू, कोना तोडने रहनि हुनको आत्मविश्वास
आस्थाक व्यवसायी सब मिलि क'।

राधा–रानीक अक्षय देहक भू–परिक्रमण क' क'
कानै छला विद्यापति
हिचुकै छला पश्चात्ताप मे।
हिचुकै छथि आइ धरि,
सुनू!

मुदा, हे!
कर्मकाण्डी सभक सूचीभेद्य अन्हार मे
जनमल तॅं छला जरूर
मुदा पुत्र–पौत्रादिक सेराएल चेतना मे
अंगार–सन लहकी मारथि
(साक्षी रहल ई भारतीय साहित्य)
तेना छोडथि बुमकारा कि जकर चमक
पांच सय बरख दूर धरि देखार पडैक।

देखार पडत
पांच हजार बरख धरि
देखबै!

विद्यापतिक डीह पर

गाम छल सूतल, सगर तम व्याप्त देखलहुँ
दांव सुतरक फेर मे जन आप्त देखलहुँ
नहि छलै कत्तहु कोनो उत्साह, उद्यम
नहि छलै निज मातृभूमिक लेल स्पन्दन

एक दिस पाथर बनल कविगुरु छला थिर
एक दिस छल भांग के जंगल अनस्थिर
डीह पर छल गेट, गेटक बन्न छल मुँह
लोक सब कहलनि–कतय के ई थिका,उँह

कविगुरुक ओ ओज कत्तहु नहि बचल छल
जतहि देखू ततहि नेतागिरि मचल छल

चुप छली ओ भगवती घन घुँघुँरु वाली
मन्दिरक पीडी ओगरने कत सवाली
गाछ बडका ठाठ सं मस्ती करै छल
गाछ तरके दूभि बे–हालैँ मरै छल
जे छला जत्तहि, ततय कुंडलि लगौने
जागि क्यो सकला कहू कविगुरु, जगौने

गुम्म भ' क' राधिका चिन्ता करै छलि
आर, एखनो कृष्ण ले' जीबै–मरै छलि
कृष्ण, जे कमब' गेला पंजाब–बम्बै
ओतहि बुडला, राधिका अहँ कते कनबै

पाथरक कविगुरु छला चुप, नगर छल गुम
हम कही जे एना सब किछु किए गुमसुम
आ कि तखने 'जयति जय भैरवि' गुँजल छल
जागतै ई डीह कहियो, से गुनल छल।

के कहत, ई स्वप्न छल कि वास्तविकता
ई कथा की आगुओ क्यो आन लिखता?

मंडन मिश्र

अहदी लोक सभक
कर्मठ पुरखा छलाह,
कतय राखितनि हुनका वारिसान?

बाघ छला तँ भीडल छला बाघ सँ
मुदा कोना करओ ई लोक विश्वास?
बकरीक वंश मे ओ
कोना भ' सकल छल हेता बाघ?

वाह वाह
हजार बर्खक भीतर जनमल
हुनकर अपने संतति
हुनका बकरी करार देलकनि
आ बाघक अरगडा मे ल' जा क' बान्हि एलनि।

वाह वाह
बडे घटाटोप संग
लिखल गेल छल बाघवंशी वृत्तान्त
तै मे करुणा–सागर वर्णित भेला बाघ–सम्राट
   जे ओ बकरी कें संग चलौलनि,
प्रदान केलनि मठासन
बकरीओ कें।

ठीक कहल, ठीक कहल कहैत
लहालोट रहल ई लोक।

आब कहि तँ रहला अछि
देसी–विदेसी खोजी–अन्वेषी लोकनि,
बेर–बेर क' रहला अछि प्रमाणित,
मुदा कोना ई लोक करओ विश्वास?

कोना मानओ प्राचीन बाघ–वृत्तान्तक विरुद्ध
कलजुगिया विद्वानक निष्कर्ष?

वाह वाह
श्रद्धा बसय ब्रह्मंडल

आ विचार अलगट्टे निपत्ता,
कोना मानओ ई लोक
तथ्य–तर्कक संवाद?

कोना मानओ?

गाम कें हम बहुत मोन पडलियै फगुआक दिन

हमरा गाम मे फगुआ दिन होइ छै मस्त मस्त हुडदंग।
सब कथू सं बेसोह हुडदंगिया सब
एक दोसरक देह पर छडपै छै आ कहै छै 'रा रा'
अपन अपन छत पर सं लोक
दोलक दोल रंग हुडदंगिया पर उझलै छै
आ उतारा दै छै 'होरी है'
से, ओ हुडदंगिया सब आ ओ लोक सब
अइ बेर हमरा बहुत मोन पाडलकै
एकटा आनन्दमग्न दर्शकक घटी रहलै ओकरा सब कें अइ बेर

किरतनिञा सब तं बुझू आरो ताल करै जाइ छै
युग कें चीरि क' उठा अनैत अछि द्वापर, कौखन त्रेता
कृष्ण कें गोंति रहल छनि गोपी लोकनि ओम्हर
एम्हर सीता संग राम खेलथि मस्त–मस्त रंगीला होरी,
बसहा पर चढि क' श्मसान दिस विदा भेल शिव कें
पछाडि घेरै छथि गौरा
आ रंगारंग क' छोडै छथि बसहासमेत

जीयह हौ बाबू जीयह
ई दुआरि सदा आनन्दित रहौ जै पर आइ
मोहन होरी खेललथि
अइ बेरुका बिरहिन सब के
अगिला होरी अवश्ये सोहाग भरल हो
जकर दर्द कें थाहैत लक्ष्मीनाथ गोसांइक नैना सं
एहू बेर नीर बहलनि!

से,
'जे जीबय से खेलय फागु' के आग्रही ओ किरतनिञा सब
अइ बेर हमरा बहुत मोन पाडलकै
कोन गीत हेतै जकरा एक तोड टाहि हम नै दै छलियै !

आ

सडक पर द' क' बहराइए मस्ताना सभक टोली
बात बात पर ठिठियाइत
बात बात पर कलाकारी करैत
बात बात पर सबटा कुनारि पताल दिस जुमा क' फेकैत
त्यागैत गोत्र आ कुल के बन्हेज
एक दिन मे जमा क' लै जाइए एतबा ऊर्जा
जाहि भरोसें बरस दिन निमहत
से, ओ मस्ताना सब गौलक अइ बेर गाना–
'होरी का संग खेलब बालम गेल परदेस'
ततेक मोन पाडलक जे जनु हम ओकर बालम भेलियै...
ओकर सभक कलाकारी कें
दार्शनिक आयाम दै बला मस्ताना
हम होइ छलियै !

मोन पाडलनि भौजी लोकनि भाबहु लोकनि
कि जे गाना कहियो नै सुनने हेती
से सुनथि फगुआ दिन हमर सत्संग मे

मोन पाडलनि काकी लोकनि बाबी लोकनि,
अबीर सं अभिषिक्त जिनकर पएर
घर सं पूआ बहार करैत थाकनि नहि
ततेक आह्लाद सं मांगियनि, ततेक दुलार सं !

बाबा कें मोन पडलियनि बहुतो कि कोना परुकां
टोपी–अबीर सं सजा क' खाट पर बैसा क'
हुनकर शोभायात्रा बहराएल छलनि जबर्दस्त !
चारि वीर जे हमसब शुरू केने रही यात्रा
से भगवतीथान अबैत–अबैत
रैली सं रैला बनि गेल।
खाट पर कौखन बैसल हंसथि बाबा,कौखन पडल,
एतय जं लागै नारा 'बोलो बोलो फगुआ महराज की'
तं 'ज.....य' कहैत ततेक लम्बा आलाप चलय
ध्रुपद–गायकी जकां
जे 'ज' सं 'य' पर अबैत आधा किलोमीटर रस्ता पार भ' जाइ।
एहू फगुआ मे जीबैत रहला बाबा, धन्न भाग..
मुदा नहि खेलि सकला फागु
भरि दिन हम हुनका मोन पडैत रहलियनि !

रघुभाइ कें मोन पडलियनि
जे बड दिक भेलनि अइ बेर धियापुता कें नव वस्त्र दै मे अभाववश,
पंडित जी कें पडलियनि जे अइ बेर नहि भ’ सकलनि हुनक
धर्माधर्म –शास्त्रार्थ....

एहना मे
नहि मोन पडल हेबनि तारा कें कि तारानाथ कें,
से के कहत !
देखने तं हेती ओहो अवश्ये जे भरल भरल आंगन मे एक कोन अछि जे सुन्न अछि...

ओह,
नोकरी दुआरे जा नहि सकलहुं गाम अइ बेर फगुओ मे
आ,जिबिते हम, अपन गाम कें बहुत मोन पडलियै........

गमन–गाथा

दूर छह तों बहुत आइ, बरु मानै छी
मुदा, तों दूर कते, दूर कते जा सकबह?

एक्के माटि के पोसाएल हमर–तोहर देह
एक्के कौशिकी ह्रदय हिलोर मारल अछि
एक्के बाध–बोन, गाछ–बिर्छ, गीत–नाद
एक्के ठाम हमर–तोहर सीड पाबैए।
हमरे बोल तहूं अपन मुहें बाजै छह
हम्मर माय तोरो माय–सनक लागै छै
हम्मर नोर तोहर नोर सेहो एक रंग
कतबो दूर जाह, दूर कते जा सकबह?

मानल जे तोहर भेस आइ बदलल छह
सोचक ढंग,साथ–संग आइ बदलल छह
भोजनक स्वाद,गीतक भास,चालि दौडै के
परिभाषा जीवनक समेत आइ बदलल छह
मुदा, प्राण तोहर वैह,गान वैह तोहर आइयो छह।

आइयो बाढि देखि क' उदास भ' जाइ छह
आइयो गाम–घरक नेह–छोह सालै छह
ककरो माय कतहु अन्न विना तरसय जॅ
दुख तों आइयो करै छह दोस, जानै छी।

एम्हर, कौशिकीक धार तोरा आइ तलिक चिकरैए
आइयो कलम–बाग छांह तोहर डेबैए
आइयो रामकका तोरा लेल वैह छथुन
आइयो जतय–ततय चर्च तोहर बड होइ छै।

एम्हर गाम, ओम्हर तों, सूत्र जुडले छै
ओम्हर देह, एम्हर मोन, तेना लागैए
बीच के बर्ख जेना दाग–दाग लागैए
एतय–ओतय जेना वस्त्र सौंस तोपल अछि
एम्हर गाम, ओम्हर तों, सूत्र जुडले छै।

कोशिक कात तोहर गाम, ओम्हर महानगर
नबका पेंक एम्हर, सुधासिक्त सृजनेच्छुक
करिया अलकतरा टांग ओम्हर छानै छह,
एम्हर मोल बबाक पोती सब फूल तोडि गौर पूजथि
ओमहर तीर्थ झाक नतिनी सब मस्त नाच नाचौए,
एम्हर किरतन मे गाबै छै आइयो धरि गीत तोहर
ओम्हर जैक्सन के उछल–कूद कल्चर के मतलब छै।

तोहर एक टांग पेंक धॅसल, एक टांग कोलतार
कतबो दूर जाह दोस, दूर जा सकबह?

सुनल जे ओतय बहुत व्यस्त जीवन छह
एकक बाद काज एक, मिटिङ तीन, सिटिङ दस–दस टा
लक्ष्यक प्राप्ति मे तों भूत जकां लागल छह,
रतुका बाद एलै दिन, फेर राति एलै
भोर ओ सांझ के पहिचान तोहर लुप्त भेलह
सांझक दीप तोरा लेल कते दूर भेलह?
भोरुका भजन अकाबोन मे की मोन रहत?

सुनल जे ओतय सभक अलग जीवन छै
कनिञा केर अलग, तोहर अलग लाइफ छह
धिया–पुता धरिक केन्द्र–विन्दु अलग–अलग
सब क्यो अपन–अपन लक्ष्य टा मे लागल अछि,
अलग–अलग व्यक्ति सब कें जोडैए चौनल टा
एम०टी०वी०,एफ०टी०वी०, ई टी०वी० ओ टी०वी०
अलग–अलग व्यक्ति सब कें जोडैए जैक्सन टा।

तोहर विचित्र दशा हम मुदा, अकानै छी–
कहियो पाप देखै काल तोरा अकस्मात
फुच्चन जादबक भगैत मोन पडि जाइ छह,
कहियो वोदकाक घोंट तोरा अन्तस् मे
फगुआ केर सरस भांग जकां टभकै छह,
कहियो विश्व भरिक सुन्दरीक मेला मे
गाम केर लजबिज्जी मालिनी कें ताकै छह,
हाइ स्कूल केर ओ कांच नैन, सुकपुक मन

रूस ओ फ्रांस तलिक संग तोहर घूमैए।

तन सँ छह ने क्षणो भरिक तोरा पलखति दोस,
मुदा मन तँ तोहर ओहिना आइयो बतहा छह,
तन सँ टूटि गेलह, गाम–घरक वासी तों
मन पर धाह बहुत सभ्यताक लगलह अछि,
मन सँ ने तों एम्हर, ने तों ओम्हर, ई हालति
मन सँ 'कान गुजू कान गुजू' खेलै छह।

नोट केर ढेर तोहर आगु–पाछु लागल छह
स्वर्णक नदी जेना बाम–दहिन बहि रहलह,
गाम मे माछ पोसै छला जेना बाप–ददा
कैक टा बान्ह–पोखरि सोन दोस, पोसने छह।
गामक लोक जँ जाए ड्राइंग–रूम देखय तोहर
बैसक जोग जगह ओतय साइत नहि पाओत,
गामक लेल ओना, मन मे जगह आइयो छह।

तोहर ओ हाल मोन पाडि, मोन कचकैए
तोहर नेनपनक ओ संघर्ष, ओ गरीबताइ,
गामक लोक केहन छुद्र सेहो देखने छी,
कोमल बोल धरि ने तोरा कहियो भेटल छह
गामक मठोमाठ अपन–अपन खेमा मे
हास आ व्यंग्य केर पात्र तोरा रखने रहह,
मुदा, तों धन्य दोस, लाज माय के रखलह
माय के आस आ विश्वास, मायक करुणा के
लाज तों रखलह, लाज तोंही टा रखलह।

जै–जै बाट द' क' तों गेलह आ बढलह
बाट ओ एखनो उदाहरण बनि क' चमकैए
गामक छात्र सब कें बुझबै छथिन शिक्षक सब
छात्र जँ छल जँ क्यो, वैह एक शंकर छल।
तोहर स्वभाव, तोहर चालि, तितीर्षा तोहर
दिन–राति लगनशील तोहर दिनचर्या
तोहर ओ सूझ–बूझ, प्रेम–भाव, परिचर्या

गामक लोक लेल अविस्मरणीय छै, भैया।

जै–जै बाट द' क' तों गेलह आ बढलह
बाट ओ एखनो उदाहरण बनि क' अभरैए,
हरेक बाप अपन बेटा मे शंकर कें ताकै छै
हरेक माय करय कबुला बेटा शंकर–सन
गाम केर बाध–बोन हीत मांगय शंकर–सन
उत्साही नौजबान शंकर कें ताकै छै।
पडोसियाक धर्म केहन हो तॅ नीज शंकर–सन
नाटकक नायक केहन हो तॅ नीज ओकरे सन
बिपतिक बेर मे समांग हो तॅ शंकर–सन
लोकक मित्र जॅ हो तॅ एक ओकरे सन,
गामक लोक बेर–बेर यैह बाजैए
गामक लोक बेर–बेर यैह चाहैए।

गाम थिक रंगमंच, नाटक के हीरो तों
गामक कथा तोरे चौबगली घूमै छै
यद्यपि, दूर छह तों, नाटक के परदा पर
एको बेर तोहर आगमन कहां होइ छै।

गामक लोक केहन छुद्र छलै, से देखल
गामक लोक केहन गुणपूजक, से देखहक
गामक लोक बडा बिसरभोर,असावधान
गामक लोक भविष्यक आहटि नै बूझय।
गामक लोक मुदा, भीतर सॅ बड सुद्धा
समयक सत्य सहज मोन सॅ स्वीकारि लियए
कल्हुका 'खलनायक' आइ एकर नायक छै
तकर की माने, की मतलब से बुझहक।

गाम के लोक कें तों एक पाइ नै दै छह
लोकक स्वार्थ–सिद्धि तोरा बुतें नहि संभव,
गामक लोक तोरा सॅ ने कोनो आस करय
लोक तॅ सिरिफ अपन सुख–दुख मे बाझल अछि।

मुदा, ओ समय, जखन सांझ एतय उतरैए
आर, ओ समय, जखन मौन व्याप्त भ' जाइ छै
लोक सब चौन मनें घूर लग मे बैसै अछि
अपन–अपन लग्गी सॅ सागर कें थाहै छै,
अपन–अपन बुद्धि–बलें समयक आख्यान रचय
अपन–अपन सीमा, निस्सीमता कें आंकै छै।
जे बीतल तकर अर्थ, अनबीतल तकर सूधि
अपन–अपन बुद्धि–बलें सभक भाव पकडै छै।

मौनक क्षण, कि जखन स्वार्थ टूटि भागै छै
आत्मलिप्त जीवन सॅ क्षणभरि के पलखति मे
लोक अपन चौबगली शिव–सुन्दर ताकै छै–––
तखन तोहर नाम ओतय ज्योति जकां छिटकै छै
तखन तोहर कएल काज सभक मोन मोहै छै
तखन तोहर जीवन–क्रम 'कथा' जकां लागै छै
लोक अपन–अपन त्रुटि ग्लानि–तर मे झांपै अछि
लोक अपन–अपन स्नेह तोरा लेल पठबै छह,
गाम के अन्तरिक्ष ओहि स्नेह सॅ डब–डब
गाम के मौसम मे स्नेह मिझर भ' जाइए।

तोहर गुणक चर्चा सॅ एतय बहुत फैदा छै।
ककरो प्रेरणा भैटै छै तोहर जीवन सॅ
ककरो लेल तोहर कएल काज छै आदर्श
ककरो सुतल प्रेम तोर नामें जागै छै
तोहर गुणक चर्चा सॅ बहुत–बहुत फैदा छै।

मुदा, केहन भीषण ई सत्य छियै हौ बाबू,
अकाबोन जंगल मे ओम्हर तुंही फांसल छह
कृष्ण जकां गेलह जॅ गोकुल सॅ द्वारका
मोन तोरा संग तोहर नै गेलह, नै गेलह।
द्वैध आर दुविधा के दलदल मे बाझल छह
केहन महाभीषण ई सत्य छियै हौ बाबू।

तोहर विगत जीवन के ककरा ओतय खगता छै?

तोहर नेह, तोहर सौख्य केर ओतय मतलब की?
तोहर संघर्ष ओतय कौडी के मोल बिकय
तोहर तितीर्षा के ककरा आभास ओतय?
एम्हर तोहर जीवन के दसगरदा फैदा छै
ओम्हर तोहर जीवन मे कोनो स्पन्दन नहि।

जेना–जेना अर्थचक घुमबै छहु, घूमै छह
जेना–जेना राजनीति घूमैए, घुमबै छहु
शेयर बजार केर चढल भाव चढबै छहु
सरकारक अस्थिरता खसल भाव खसबै छहु,
भांटा जेना सूप बीच गुल्ली जकां गुडकैए
तेना तोहर सभ्यता, बिहारिक बिजलौका–सन
अन्तरिक्ष–मौन बीच हाहि जकां गुडकै छहु।

मन मे रहह शक्ति, तन मे ऊर्जा रहह
चाहितह तॅ देश नव बना लीतह,
चाहितह तॅ पृथ्वी के प्यास मेटा सकितह तों
चाहितह तॅ गाम स्वर्ग क' दितिहक
अप्पन आदर्श, अपन आकांक्षा
धरती पर उतारि सकितह तों,
चाहितह तॅ काव्य–कला–मरुथल मे
नवता–भव्यताक गाछ एक रोपि सकितह
चाहने होइए की ने? की कहियह
चाहि जॅ लितह, सूर्य भ' जइतह।

चाहलह जरूर, मुदा की चाहलह?
तोहर ओहि शक्ति, ओहि ऊर्जाक की भेलह?
तोहर आदर्श, तोहर आकांक्षा
नवता–भव्यताक स्वप्न तोहर की भेलह?

मन सॅ ने तॅ एम्हर, ने तॅ ओम्हर, ई हालति,
मन सॅ टूटि गेलह विश्व–नगर–वासी तों
मन के शक्ति सभे चूसि गेलहु कोलाहल
मन के स्वप्न सभे, गीत सभे, प्रीत सभे।
एखनहु टीस जकां गाम मन मे टभकै छहु
एखनहु प्राण तोहर विश्वनगर नहि बनलहु

एखनहु रोम–रोम राति–दिना कलपै छहु।
०००००

बिलमह, आ पलटि जाह, सेहो एक रस्ता थिक
थाहह, आ पार करह, सेहो एक रस्ता थिक
कनिञे अकानह जे कोन दिशा मनुखताइ
कोन दिशा गाम तोहर, लोक तोहर पाबै छह,
जिद्द मुदा सभ्यताक हाबी छह टीक तलिक,
तनक व्यसन मोन–उपर लदने अहिरावण–सन
कोन घाट लगबह, से के जानय हौ बाबू।
०००००

मनबह यैह दोस, औखन धरि
कपाट गाम केर बन्न तोरा लेल नहि छह
मनबह यैह, गाम औखन धरि
तोहर वेदनाक धार जकां भोथ नहि भेल।
मनबह यैह भाइ, दोस तोहर कविता मे
एखनो मूर्ति गढै छहु तोरे।

मनबह यैह, समय बांकी छै
मनबह यैह, एखन झांकी छै।

मानव–शास्त्र

रहलहुं हम कहियो गाम मे, कहियो शहर मे
मुदा जतय कतहु रहलहुं
हमरा आगू–पाछू बाम–दहिन
पाओल जाइत रहलाह ढेरीक ढेरी मानव।

हम ठेकना क' चीन्हि सकै छी–
ई ढेरीक ढेरी मानव भेल करथि
कुल एक्के जातिक,
ओना एहि बातक जडि पताल छल
जे मानव–मानव कें जुदा साबित करबाक लेल
बहुतो राजनीति बनाओल गेल छल, बहुतो तर्कशास्त्र
अनेक–अनेक धर्म, अनेक–अनेक साहित्य।

हमरा खूब मोन अछि–
ई मानव लोकनि
विगत दिन के मीमांसा मे डूबल रहथि
अथवा
आब' बला दिन के योजना–परियोजना मे।

जॅ संजोग सॅ भेटि जाय कतहु क्यो वर्तमान मे
आ हम खुसी हेबा लेल होइ
कि तखनहि पता लागय–
ई मानव नहि थिका, बुद्ध थिका।

देखैत–देखैत अकच्छ रही हम
जे ई मानव लोकनि हवा मे चलाओल करथि नाह,
आ, धार–पोखरि मे गुड्डी उडाबथि।

वस्तुजात सब कें ओकर अथ–उत मे देखबाक
जे पाओल जाइ चलाकपना,

विद्वान लोकनि तकरे नाम धयने छला–'मानवता'।
ई जे मानव लोकनि छला, विधाताक सर्वश्रेष्ठ सृष्टि,
हम देखी जे अधलाह बात पर हॅसथि
आ, नीक बात पर आरो जोर सॅ हॅसथि।

बिसरब हम ईहो कोना
जे कनैत मानव हम सेहो कम नहि देखने छी,
मुदा सत कही तॅ
हिनका सभक नोरक सम्बन्ध
मानवताक गलन–छीजन सॅ अक्सरहां नहि कोनो रहैक।
अपन नोर हिनका लागनि दुखद–अतिदुखद,
मुदा वैह नोर जॅ पाओल जाइ अनका आंखि मे,
आनन्द मनाओल करथि ओ लोकनि।
किछु गोटेक ओतय तॅ
बधैया बाजै, बधैया।

जेना–जेना ओ लोकनि ऊपर उठल जाथि,
जडि हुनक छूटल जाइनि।

दाढी बढौने आतंकवादी सेहो देखलहुं
गेरुआ पहिरने डकैत सेहो।
मुदा जुलुम कहियौ जे
ई लोकनि मानव हेबा सॅ भयभीत रहथि एक्के रंग
जेना अहां भयभीत छी एड्स सॅ।

जादब देखलहुं, बाभन देखलहुं
हिन्दू देखलहुं, मीयां देखलहुं
मानव हेबा सॅ सब कें देखलहुं घबराइत।

तखन तॅ ईहो जे
नाना जीव–जन्तु जेना अपन–अपन भाखा मे रचौए सुभाषित–
बडे भाग कौआ–तन पाबा
सुग्गर–तन पाबा,मच्छड–तन पाबाय
मानवक भाखा मे सेहो रचल गेल छलै गीत–कबीत
बडे भाग मानुस–तन पाबा.....

अद्भुत छल मानव।

¼n½

जतए बीतल होअए अतीतक कोनो कालखंड
ओहि स्थान सभक प्रति, स्थिति सभक प्रति
बडे प्रेमिल भेल करए मानव।
मदिर रसकदम्ब जकां ओ जग्गह, ओ जाल
ओकर मनोमस्तिष्क मे घूलल करए
सिहरनकारी पलास फूटैक जीह सॅ हृदय धरि।

नेनपनक घर,स्कूलक ओसार, हास्टलक रूम
नेनपनक बाध–बोन,गाछ–बिर्छ,टिकला आ झडबैर
आनन्दसंदोह होइक तेहन बाद मे
जेहन प्रेयसीक कोडा।

हम देखी–
अतीत के फुलबाडी मे मानव
ठहाका जकां गूंजल करए,
ढेकरल घुरए सर्वतंत्र–स्वतंत्र सांढ जकां।

नेनपनक कोठली के जखन खूजए कपाट
रंग–बिरंगक टिकली सब हेलैत देखार होइक
मस्त–मस्त लहकी सब, चहकी सब।

मुदा असली बात ई छल–––
बडे स्मृतिहीन होइ छल, बडे अतीतघ्न
मानव नामक ई जाति बडे होइ छल इतिहास–द्वेषी,
अतीतक ओ ठहाका तॅ बस एक मुखौटा छलै,
बस एक पाखंड।

देखल जखन तॅ गुम्म रहि गेलहुं–––
स्त्री के पेटक ओ कोठली धरि ओकरा मोन नहि रहल करै
जतय विश्राम कए नव–नव मास
ओ धरती पर उतरल करए,
पाबए बडे भाग मानुस तन।

स्त्रीक आत्मा तॅ खैर बड भारी बात भेलै,
ओकर देहक महिमा धरि बिसरल रहए ओ सौंसे जनम।

स्त्री कें ओ गीजए,गुरु यौ, मत्थए
स्त्री कें ओ जिन्दा जरबए
चलबए ओकरा गरदनि पर पिजाओल खंडा।

स्त्री कें ओ जुत्ता जकां पहिरए
(जुत्ता मे लोक ढुकबैए सिरिफ पएर
करेज मे साटि क' नहि चलैए बाट।)

एखन तँ खैर एलैए नहि,
औतै तँ देखब पोस्टमार्टमक रिपोर्ट–
मानव जे मुइल
से हरसट्टे गीडि गेल स्त्री कें
पचा नहि पेबाक कारण मुइल।

अपच रोग सँ कएल प्राणान्त।

¼rhu½

देखल हम जे
मानव–जाति मे प्रायः सभक सब लोक
पोसए किछु–ने–किछु जरूर।

क्यो बिलाडि पोसए,क्यो सुग्गा वा कुकूर
बकरी आ गदहा पोसब तँ चलू एक बात भेल,
हम सांप पोसैत सेहो देखल,
विरोधी–दलक नेता पोसैत सेहो।
आ, एकरो कम कोना कहबै
जे बडे आराम सँ पोस मानियो जाइ सभक सब।

किछु गोटे कें हम
कुकूर–बिलाडिक संग–संग वा तकर बदला
अपन माय–बाप पोसैत सेहो देखलहुं
(फैशन ओना ई आउटडेटेड भेल जाइत छल)

किछु लोक गलतफहमी पोसए, किछु खुशफहमी
किछु लोक तँ सुच्चा भ्रम पोसए
भ्रम मसीहा हेबाक

वा कि भ्रम आदमखोर हेबाक।

किछु लोक तँ महराज,
एहन–एहन चीज पोसए
जकरा अहां देखियो नहि सकैत रही एहि आंखिएं,
ततेक होअए सूक्ष्म आ कि होएबे नहि करए,
मुदा पोसल जाए मजा सँ।

किछु गोटे प्रेत आ जिन्न पोसए, किछु सद्यः चुडीन
मुदा सभक सब प्रायः
कोनो–ने–कोनो देवता पोसए जरूर।

कैक बेर हम देखलहुं–
मानवक पोसुआ अनिष्टधर्मी देवता लोकनि
जखन शून्य मे फडफडाबए पांखि,
मानव करए शुरू मानवक वध,
गुम्बद ढाहए,मुरूत तोडए,
काटए गाछ, तोडए शिलाखंड।

ततेक सफाइ सँ मानव मारए मानव कें
कि महराज,
जमराज आ धरमराज धरि कें उकासी ध' लैनि।

कहलहुं ने!
अद्‌भुत छल मानव।

¼pkfj½

मानव लोकनिक लिखल किताब मे
अधिकतर व्याकरणक किताब मे
'मानवता' नामक शब्द प्रयुक्त भेल करैक।

मानवताक अर्थ अधिकतर तेहन लगाओल जाइक
जेहन कि मानव असल मे होइत नहि छल,
वा कही कि भइये सकैत नहि छल।

मानव–जाति मे अजब रीत देखलहुं–
अपन सपना मे अधिकतर
ओ तेहन बनए चाहए
जेहन कि बनि सकैत नहि छल।

ओकर 'चाहब' आ ओकर 'होयब' के बीच
एक खाधि पाओल जाइक भयाओन
सदरिकाल विरोधाभास।
बात ई बेजाय छल, गुरु यौ, अनुचित
मुदा
मानवक भाखा मे एकरा 'चिन्तन' कहल जाइक।

¼ikp½

आ देखलहुं हम
जे मानव लोकनिक अखबार मे रोजे रोज
समाचार छपय हत्याक।

गाय–महीस लेल लोक मारय लोक कें
कार पेबाक लेल वधू मारल जाय,
रुपैया पेबाक लेल बच्चा।

किछु लोक एहन होअए,
जकरा बांकी लोक राहत–संग कहए हत्यारा
जखन कि महराज, ई निश्चय करब कठिन छल महाग
जे मानव जाति मे की क्यो एहनो छल
जे कि हत्यारा नहि छल?

कारण
हमरा बतौलनि लोक
एहनो लोक भ' चुकल रहथि मानवे जाति मे त्रेटाह,
जे फूसि बाजब धरि कें पाप कहथि,
छल करब धरि कें हिंसा।
एहन मानवताक ओ क' गेल रहथि बखान
जाहि मे हत्याक मादे सोचबो होइक एनमेन हत्या।

मुदा चाबस कहबाक चाही अवश्ये
सुरुहे सॅ किछु चतुर–चलाक भेल अबै छल मा०जा० मे,

अतिशय–अमोघ कला–मर्मज्ञ
वैह बनौलक शास्त्र आ कानून,
जे चोरिविद्या बनौलक।

सुनबै चलाकी, गुरु?
जे गछित होअए जब्बर बौक–बहीर,
तकरा करए देल जाए फैसला।

वाह रे मानव वाह
जकरा हाथ मे रहौक कानून
सैह ने क' सकैए चौन सॅ हत्यो।

¼No½

जकर चारूकात–चारूकात
घूमल करए, घूमल करए मानव
(जेना सुइया घूमैए घडीक, चारूकात)
ओहि केन्द्र–विन्दुक नाम छल–टाका।

पापक परिभाषा होइत हो भने जे कोनो,
जे कोनो लक्षण होइत हो अनुचित के,
देखल हम
कोनो नहि बांकी बचल छल हिंसा ने जघन्यता
एकैसम सदी अबैत–अबैत,
जकरा मानव अपनौने नहि हो टाकाक लेल।

आ, अंदाज कने अहूं कें जरूरे हएत गुरु,
जे एहि टाकाक आखिर करै की छल ई सब उपयोग?
अपने रसातल कें बेसाहए मानव अपने,
अपने अरजल टाका सॅ।
त्यागि आबए अपन मुस्की, अपन लय, अपन ऊष्मा
रागहीन उस्सर खेत मे टाकाक ढेरी पर बैसल
माइक टायसन बनल बपहारि काटै छल मानव।

शरशय्या पर कुहरैत भीष्म
कोनो एक आदमीक नाम छलै नहि महराज,
सौंसे दुनियां कें जे शरशय्या बना देलक, स्पन्दनहीन
हरेक मानव भीष्मे–भीष्म भेल करैक।

टाका सॅ हम देखल, मानवो कीनल जाय
मानवक मासु सेहो।
टाका सॅ बनल यन्त्र–तन्त्र सेहो कम नहि देखल गुरु,
जे मानवक मासु रान्हि स्वादिष्ट
मानव कें परसल करैक।

¼lkr½

देखितहुं तॅ पौतहुं
जे स्मरण रहल करैक जतबा जे घनेरो,
ताहि सॅ लाख–लाख बड बेसी
बिसरि गेल करए मानव।

अहां कें नहि होअए से बरु संभव
मुदा हमरा बहुत आचरज भेल महराज,
जे बिसरैत–बिसरैत अन्ततः
ओ सुख के परिभाषा–समेत बिसरि गेल सरपट्टे।
विज्ञापन देखि–देखि अकानए आवश्यकता
ओ बजार देखि०देखि लिप्सा खरचए,
पृथ्वी देखि–देखि जेना क्यो थाहए अकास
कहबे की करबै एकरा?
ई सब सुख बिसरबाक निर्दोषिता छल।

सफल–सुफल हेबाक अछैत
अधिकतर लोक दुखी पाओल जाए,
जखन कि असफल लोकक दुखी हएब
तॅ करमेक लिखल मानल जाइत छल।

हम देखलहुं महराज,
जे किछु हथगर–गोडगर लोक सेहो
पेट नहि भरबाक चिन्ता मे दुखी देखल जाए,
जखन कि सम्पूर्ण मानव–शरीरक तुलना मे
पेट एक क्षुद्र अंग रहल करैक,
जकर भरण लेल सक्षम रहए कीडा–कीटाणु–पर्यन्त।

शक्ति रहैक पहाड ढाहबाक जकरा देह मे,
से दुश्मनक रुइयां धरि उपाडि नहि पाबए हजूर,

तेहन बिसरभोर सब रहए कायर।

बड कचोट होइए कहैत
दुख ओहि वायुमंडल–सन छल,
जे सम्पूर्ण पृथ्वी पर विद्यमान छल,
एनमेन ओहि हिंसा जकां
जे जल–थल–नभ मे,सगरो
बाउग क' लेने छल मानव अपन सुरक्षाक निमित्त।

¼vkB½

लेकिन, नीक बात
आब कहै छी, सरकार।

देखल हम अन्ततः ईहो
जे मानव एखनहुं जनमा सकैए
चाहि लियए तॅ बच्चा,
चाहि लियए तॅ विचार।

छगुन्ता भेल हमरो अनठेकान
जे कहू,
जते टाक अछि मानवक मनोलोक
ताहि सॅ बड–बड बेसी विध्वंस के चिन्तन
मुदा तैयो मानव कोना क' ल' पाबैए निर्माण?

आ, हमरा भेल
जे समुच्चेक समुच्चा संभावना एखनो मुइल नहि छलै गुरु।

मानव बचल छल एकटा खाली कन्टर,
जाहि सॅ चूबि गेल छलै सबटा तेल,
मुदा 'खाली' जकरा कहबै,
से कन्टर एखनो खाली नहि भेल छलै।

प्रलय–रहस्य

घरही जे जयबें रे सहुआ
सहुनियां–बुधी रचबें
बिसरि जयबें कोसिका के नाम....

आ, साहुजी ठीके बिसरि गेला।

सय बरख भेलै, दू सय बरख भेलै
कोशीक संग भेल रहनि करार,
कोशी कें शंका छलनि तहियो
जे जहिना सकुशल पौता अपना कें साहुजी,
सहुआइन–संग मिलि क' रचता बुद्धि
आ, कोशी कें बिसरि जेता।

मुदा
वचनबद्ध भेल रहथि साहुजी–
जीबो मोरा जयतै कोसीमाइ
परानो किछु जे बचतै
तैयो ने बिसरबह तोहर नाम....

जीबो बचलनि
कथी ले' जयतनि हुनकर परान
मुदा बडे आराम सॅ बिसरि गेला कोशी के नाम।

बिसरि गेला जे कोशी के माटि सॅ बनलनि हुनकर काया
बिसरि गेला जे कोशी के पानि सॅ पौलनि संस्कार
कोशीक लास्य सॅ जॅ सिखलनि जीवन–राग
तॅ, हुनके ताण्डव सॅ आविष्कृत केलनि धर्म।

खसैए जखन लोक
तॅ खसिते चलि जाइए।

सैह देखियौ
हुनकर धियापुता हेलब धरि बिसरि गेल।

सोंइस–नकार–बोछ कें देखलक जॅ कहियो
तॅ खाली ज्योग्राफिक चौनल पर,

देखियौ
ई बेचारे साहुजी
हॅसैत रहला सब दिन कोसिकन्हाक लोक पर
दोख जिनकर यैह जे दू तटबंधक भीतर फॅसल छला ओ सब,
तिनका सब पर हॅसथिन
जे पनिहग्गा होइए ई सब।

कहलहुं ने,
खसैए जखन लोक
तॅ खसिते चलि जाइए।

00000

ककरा बुद्धि पर एते निचिन्त छला साहुजी?

ककरा हुलकौला पर एते भेलनि हिम्मत
जे जइठां कोशी–धार नै पाबै छल थाह
ततय बनौलनि दूमहला।
जइठां रानू सरदारक संग भेल रहै कोशीक मुलकात
निज तइठां खोलि लेलनि फैक्टरी।

ककरा बुद्धि पर छला एते निचिन्त?

अइ आजाद मुल्क मे ककर अपन भेलै सहुआइन जे हिनकर होइतनि?
आ, तकरा बुद्धि पर एते अगराएब?

एक सहुआइन गेल तॅ दोसर हाजिर
दोसर गेल तॅ तेसर हाजिर।

बिका गेल देश महराज,
एही सहुआइनक कुचक्र मे।
कहि लियनु सब भने हुनका 'नेताजी नेताजी'
मुदा असल मे तॅ भेलखिन ओ साहुजीक बहु
जे चुनावक बाद सांढ भेल चरी करथि।

जकरा दुअरिया हो रानू कोशी बहे धरबा
सेहो कइसे सूतत निचिन्त?
मुदा साहुजी निचिन्त सूतल रहला

तते भरोस छलनि नेताजीक आश्वासन पर।

बनैया सुग्गर आ नीलगाय पर केने रहितथि
हुराड आ बनबिलाड पर
गदहा आ महीस पर जॅ केने रहितथि भरोस,
तॅ आइ ई दिन नै देख' पडितनि।

चुट्टी आ पिपडी धरि,
गडै आ चेंगा धरि
होइए एतबा जागन्त
जे यदि ओ अहां कें आश्वासन देने रहितय
तॅ की मजाल
जे तटबंधक भीतर जमा भ' पबितै एतेक एते सिल्ट?

सिंगही ओकरा अपन कांट सॅ काछि भसा दीतै महराज,
हारिल आ बटेर ओकरा लोले लोल तौलि लीतय।

की मजाल?
जे जतय बनल छलनि साहुजीक तिनमहला
ताहि सॅ पांच मरद ऊपर बहितथि कोशीधार
बालुक भीड पर कनैत हकन्न?

ककरा भरोस पर हौ बाबू साहुजी?
———नेताजीक टीमक भरोस पर।

नेताजी कहता 'आम'
तॅ सौंसे मुलुकक इंजीनियर चिकरत 'आम आम'
आ, जॅ नेताजी बाजि गेला 'जामु'
तॅ सुनाइ पडत समस्त विशेषज्ञ सभक शृगाल–स्वर–
'जामु जामु जामु'
आ, ताहि लोक सब पर भरोस?
एते एते भरोस?

कथी ले रोपलियै कोसीमाइ आमुन–जामुन गछिया
कथी ले रोपलियै बीट बांस?

ईहो कोनो पुछबाक बात भेलै?
रोपने तॅ हेता भोगेक लेल

मुदा के नहि कर’ देलकनि भोग?
के भसिया क’ ल’ गेलनि
सय बरखक दू सय बरखक प्रगति?
के खत्ता खसा क’ मारलकनि?
सोचथु साहुजी
आबो अपन सोचथु।

00000

मुदा कोन बुद्धिएं सोचता साहुजी?
कोन मुहें बजता?

कनियो रहलनि कहियो दया–दरेग
जे जकर सखा–सन्तान छला
जकर नाद–पूरनि सॅ ग्रहण केने रहथि जीवन–तत्त्व
ओ कोशी एतबा दिन कोन हाल मे रहली?

पछिमहि राज सं एलै एक मोगलबा
बान्हि जे देलकै कोसिका–धार
ऐसन बान्ह जे बन्हलक मोगलबा
सिकियो ने पसीझै मोगला के बान्ह
हिन्दुओ ने बूझै मोगला तुरुको ने बूझै
सब जन सॅ चकरी ढोआबे
राजा शिवसिंह बैठल छल मचोलबा
तेकरो सॅ चकरी ढोआबे

एहि तरहें बान्हल गेल छली कोशिका।

कलपि कलपि क’ चिट्ठी लिखथि कोशी
अपन एक–एक बहीन कें–
दे न गे गंगा बहिनो साथ
दे न गे जमुना बहिनो साथ
दे न गे कमला बहिनो साथ
सब बहीन चिट्ठी पढथि, कानथि हकन्न
भीजि जाइन बाम–दहिनक माटि
हुनका सभक नोर सॅ
जे कि बहीनक दुर्दशा पर बहराइन।

मुदा किनको नहि चलल किछु
कोनो सक्क नहि ककरो।
मोगलबाक बान्ह से भेल बज्जर
जे ओहि मे सिकियो नै पसीझै छलै,
कोशीक धार तँ बहुत पैघ बात छल।

सालोसाल चीत्कार करथि कोशी–
गे बहीन गंगा, सरंग ठेकि बालु पर हकरै छी गे
गे बहीन जमुना, सबटा पैरुख चुकि जाइए
रेगिस्तान परहक तलमली मे गे

कोशी मोन पाडथि पछिला दिन, पछिला बाट
ओ जुग, ओ रुआब
आ, हिचुकि हिचुकि कानथि।

हुनकर नोर जे बहय धाराप्रवाह
ताही सँ टुटै छल कहियो पूर्वी तटबंध,
कहियो पच्छिमी तटबंध।

मुदा कहू, कहिया सुनलनि साहुजी
कोशीक अरण्यरोदन?
वा सर्वनियन्ता सहुआइने सुनने होथि
तँ सेहो कहू।

उनटे कविता रचौत रहला कवि–गण
उपद्रवी दुष्टा कोशी कें भेटलै खूब सजाइ
बान्हि क' मूसुक बान्ह भाइ सब जेल मे देल ढुकाइ
बोलो भैया रामेराम हो भाइ
कोशी–सन बेदरदी जग मे कोइ नै....

ठीके बेदरदी जग मे कोइ नै
मुदा
कोशी–सन आ कि सहुआइन–सन
सोचथु आबो साहुजी
भेदन करथु प्रलयक रहस्य.....

आ, अन्त मे मिथिला

हमरे चेतनाक दोमट सँ जनमल छल

ई छांहदार वृक्ष सभ,
जकर एक–एक डारि–पात काटि–काटि
हम अपना पशु–वर्ग कें खुआएल अछि।

राजा शिवसिंहक पगडी कें हम
लुंगी बना क' पहिरल अछि अपन एकान्त मे।
अपन एकान्त मे हम
कहियो नहि सुन' चाहलहुं अछि अपने अबाज।

मिथिला बिराजै तॅ छली
हमरा तन–मन मे संपृक्त
मुदा व्यसनी हम तेहन
जे अपने तन–मन खखोडि–खखोडि
समिधा जकां झोकलहुं अछि
बेहोशीक कुण्ड मे।

सौंसे पृथ्वी,सम्पूर्ण देश, समस्त समाज
हमर बेहोशीक केलक अछि अभ्यर्थना
मुदा विडम्बना एहि समयक
जे लटुआएल झूर–झमान मिथिला
हमरे अतमा मे थरथराइत रहल छथि
पीपरक पात जकां पूरे समय।

एहि भूमंडलीकृत समय मे
सभ क्यो क' रहल अछि
हमर बेहोशीक अभ्यर्थना
जखन कि देखू–––

अपने दुनू पएरक
सिन्दूराभिषिक्त अरिपन बना क'
टांगि जॅ लीतहुं कोठली मे चौबगली
तॅ सेहो बनि सकै छल
हमर जागरणक कारण।